CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# अग्रपाल राजवैद्य जीवक

विपश्यना विशोधन विन्यास

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विपश्यना एवं आयुर्वेद सम्भाषा-परिषद्
अक्तूबर १५ एवं १६, २००५ के अवसर पर प्रकाशित

# अग्रपाल राजवैद्य जीवक

**विपश्यना विशोधन विन्यास**
इगतपुरी, महाराष्ट्र

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

**H32- अग्रपाल राजवैद्य जीवक**

© विपश्यना विशोधन विन्यास
सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : २००५
पुनर्मुद्रण : २००९, २०१४

**मूल्यः ₹. ३०.००**

ISBN: 81-7414-275-4

प्रकाशक:
**विपश्यना विशोधन विन्यास,**
धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२ ४०३.
जिला- नाशिक, महाराष्ट्र
फोन: ०२५५३-२४४०७६, २४४०८६, २४३७१२,
२४३२३८ फैक्स: ०२५५३-२४४१७६
E-mail : vri_admin@dhamma.net.in
info@giri.dhamma.org
Web site : www.vridhamma.org

मुद्रक
**अपोलो प्रिंटीग प्रेस**
२५९, सीकॉफ लीमीटेड.,६९ एम आय डी सी,
सातपुर, नाशिक- ४२२००७.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# विषय-सूची

**अग्रपाल राजवैद्य जीवक** .......... १
साकेत के नगरसेठ की भार्या .......... ३
भगंदर का रोगी बिंबिसार .......... ५
जीवक उपासक हुआ .......... ६
मस्तिष्क पर शल्यक्रिया .......... ६
अँतड़ी में गांठ .......... ८
तथागत की चिकित्सा .......... ९
अवंति नरेश का पांडुरोग .......... १०
गृहस्थों द्वारा दिया गया चीवर का दान स्वीकार्य .......... १२
आम्रवन विहार .......... १३
उपासक के आचरण .......... १३
चंक्रमण और जंताघर .......... १४
प्रव्रज्या की अयोग्यता .......... १४
चूलपंथक और महापंथक .......... १६
तथागत के चोट की मरहम-पट्टी (व्रण-बंधन) .......... २०
अजातशत्रु को भगवान के पास ले जाना .......... २१
जीवक के छह गुण .......... २३
अग्रपाल स्रोतापन्न .......... २४
अग्र की उपाधि प्राप्त करने का आशीर्वचन .......... २४

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# अग्रपाल राजवैद्य जीवक

भारत के जनपदों में गणिकाओं की परंपरा तो पुरानी रही होगी, परंतु राज्य द्वारा किसी को सर्वश्रेष्ठ सुंदरी घोषित कर जनपदकल्याणी के पद पर आसीन करना और राज्य की ओर से उसका एक रात का मूल्य निर्धारित किया जाना, यह लगता है २५०० वर्ष पूर्व के भारत की अपनी विशेषता थी। अनेक जनपदों में जनपदकल्याणी का पद जनपदों के लिए शोभनीय माना जाता था, गर्व का विषय माना जाता था।

राजगृह का निगमपति जब पहली बार पड़ोसी देश की वैभवशाली राजधानी वैशाली हो आया तो उसे वहां की दो बातों ने बहुत आकर्षित किया। एक तो वहां के ७,७७० राजाओं के ७,७७० राजमहल, उतने ही कोष्ठागार, उद्यान और पुष्करणियां। इन सब ने वैशाली के भौतिक वैभव को आसमान पर चढ़ा दिया था। दूसरी परम सुंदरी जनपदकल्याणी अंबपाली, जिसके कारण वैशाली अपने विलास वैभव के लिए प्रसिद्ध हो गयी थी।

बिंबिसार ने जब यह सारा ब्यौरा सुना तो उसे पहले क्षेत्र में प्रतिद्वंद्विता असंभव लगी, क्योंकि राजगृह में एकतंत्री शासन था। अतः एक ही राजा था। वह अपने लिए और अपने परिवार के लिए आखिर कितने महल बनवा सकता था? जब कि वैशाली जनतांत्रिक नगरी थी, वहां ७,७७० राजा थे। राज्य संपदा ७,७७० राजाओं में बँटी हुई थी। एक-एक का एक-एक निवास स्थान हो तो इतने सारे महल, इतने ही कोष्ठागार, उद्यान, पुष्करणियां होनी स्वाभाविक थीं। ऐसा राजगृह में होना असंभव था। परंतु जनपदकल्याणी स्थापित की जा सकती थी। इस क्षेत्र में वह वैशाली से प्रतिद्वंद्विता कर सकता था।

उसने निगमपति को आदेश दिया कि मगध की सर्वश्रेष्ठ सुंदरी कुमारी का चुनाव करे और नगर-वधू बना कर उसका मूल्य वैशाली से दुगुना निश्चित कर दे। यही किया गया। शालवती नाम की एक कुमारी को चुना गया जो अंबपाली जैसी ही अनिंद्य सुंदरी थी। उसे नृत्य, वाद्य, गायन में प्रवीण करके नगरवधू घोषित किया गया। वैशाली राज्य ने अंबपाली की

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



एक रात की कीमत पचास मुद्राएं निश्चित कर रखी थी। मगध नरेश ने शालवती की एक रात की कीमत एक सौ मुद्राएं निश्चित की।

धीरे-धीरे नगरवधू के रूप में शालवती की प्रसिद्धि फैलने लगी। कुछ समय पश्चात शालवती को गर्भ रह गया। वह चिंतित हुई। पुरुष लोग गर्भिणी से सहवास नहीं करना चाहते। अतः उसने अपनी द्वारपालिका को समझाया कि उसके लिए द्वार पर कोई आये तो कह दे कि शालवती बीमार है। यों बीमारी का बहाना बना कर उसने गर्भावस्था का समय बिताया। समय बीतने पर उसने एक पुत्र प्रजनन किया। अब उसे चिंता हुई कि संतान वाली नारी को भी पुरुष कम चाहते हैं। अतः हृदय को कठोर करके अपने पुत्र के परित्याग का निर्णय किया। उसने धाय को आदेश दिया कि नवजात शिशु को कचरे की टोकरी में रख कर बाहर गली के नुक्कड़ पर कूड़े के ढेर के पास रख आये। धाय ने ऐसा ही किया।

प्रातःकाल अभय राजकुमार महाराज बिंबिसार की सेवा में जाने के लिए उस ओर से निकला। उसने देखा, कूड़े के ढेर पर बहुत से कौवे मँडरा रहे हैं और किसी शिशु के रोने की आवाज आ रही है। उसने अपने सेवक को जांचने के लिए भेजा तो परित्यक्त बालक प्रकाश में आया। कौवों के आक्रमण के बावजूद भी वह जीवित है, यह देख कर अभय राजकुमार ने उसका नाम जीवक रखा और उसके यथोचित पालन-पोषण के लिए उसे अपने महलों में भेज दिया। उसने जीवक को बड़े प्यार से पाला। इसलिए कुमार का पौष्य पुत्र होने के कारण उसका एक नाम और पड़ा–कौमारभृत्य।

बड़ा होने पर जीवक ने जानना चाहा कि उसके माता-पिता कौन हैं। अभय ने कहा कि मैं तुम्हारा पिता हूं, परंतु माता कौन है, मैं नहीं जानता। एक मान्यता यह भी है कि वह शालवती की कोख से उत्पन्न हुआ अभय का ही पुत्र था। अभय जीवक को गणिका का पुत्र घोषित नहीं करना चाहता था। अतः उसने मां का नाम छिपाया। अथवा यह भी हो सकता है कि अभय को उसकी माता कौन है, इसका ज्ञान सचमुच न रहा हो। जो भी हो, वह अभय राजकुमार का वास्तविक पुत्र न भी हो, उसका पौष्य पुत्र तो था ही। अतः महाराज बिंबिसार का भी पौष्य पौत्र हुआ।

जीवक बड़ा हुआ तो उसने देखा कि राजा के संपर्क में जो लोग हैं, वे किसी न किसी विद्या में निपुण हैं। गुणहीन व्यक्ति की वहां कोई कदर नहीं है। अतः उसने कोई विद्या सीखने का निर्णय किया। उन दिनों तक्षशिला का

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



विश्वविद्यालय बहुत प्रसिद्ध था। वहां अनेक प्रकार की विद्याएं सिखायी जाती थीं। अतः वह अभय राजकुमार को बिना कुछ कहे तक्षशिला की ओर चल पड़ा। वहां पहुँच कर वह चिकित्सा विद्या के दिशा-प्रमुख आचार्य से मिला। आचार्य ने देखा कि युवक मेधावी है। उसे चिकित्सा-शास्त्र सीखने की अनुमति मिल गयी।

जीवक मेधावी भी था और परिश्रमी भी। सात वर्ष तक निष्ठापूर्वक चिकित्सा-शास्त्र की विद्या पढ़ता रहा और साथ-साथ उसका व्यावहारिक ज्ञान भी प्राप्त करता रहा। सात वर्ष पश्चात वह अधीर हो उठा। उसने आचार्य से कहा कि इस विद्या का तो अंत ही नहीं दीख रहा है। आचार्य ने उसकी योग्यता जांचने के लिए कहा कि वह फावड़ा लेकर आस-पास की एक योजन भूमि की जांच कर आये और जहां कोई अभैषज याने बिना औषधि के गुण वाला पौधा मिले, उसे उखाड़ लाये। जीवक चल दिया, उसने बतायी हुई सीमा की धरती जांच कर देखी। वह खाली हाथ लौट आया और बोला कि उसे बिना औषधि का एक भी पौधा नहीं मिला। सभी पेड़ पौधों में किसी न किसी औषधि के गुण विद्यमान हैं। आचार्य इस उत्तर से बहुत प्रसन्न हुआ। यह जीवक की परीक्षा थी। वह इस परीक्षा में सफल हुआ। शिष्य की परिपक्व योग्यता देख कर आचार्य संतुष्ट हुआ। उसने कहा – अब तुम्हारी शिक्षा पूरी हुई। घर लौट सकते हो। जो सीखा है उससे अपनी जीविका बखूबी चला सकते हो। आचार्य जानता था, जीवक के पास गुरु-दक्षिणा देने के लिए कुछ नहीं है। अतः उसने प्रसन्न होकर अपने योग्य शिष्य से कोई दक्षिणा न मांग कर, उल्टे उसके पथ के लिए थोड़ा-सा पाथेय दिया और उसे विदा किया।

## साकेत के नगरसेठ की भार्या

जीवक तक्षशिला से मगध की ओर चल पड़ा, परंतु पाथेय बहुत अल्प था। साकेत पहुँचते-पहुँचते समाप्त हो गया। अभी बहुत लंबा रास्ता बाकी था। अतः उसने निर्णय किया कि वहीं कुछ दिन रुक कर किसी रोगी की चिकित्सा करूं और राह-खर्च लायक कुछ धन कमा लूं। नगर में रोगी की खोज में निकला तो पता चला कि साकेत के नगरसेठ की भार्या सिर-दर्द के रोग से पीड़ित है। अनेक वैद्यों ने उसकी चिकित्सा की पर कोई सफल न हुआ। जीवक नगरसेठ के द्वार पर गया। उसने द्वारपाल को अपना परिचय दिया और सेठानी की चिकित्सा करने की उत्सुकता दिखायी। द्वारपाल ने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



भीतर जाकर सेठानी को यह सूचना दी। परंतु द्वारपाल से पूछने पर जब सेठानी ने यह जाना कि आगंतुक बैद्य युवा है तो वह अन्यमनस्क हुई। उसने कहा, सात वर्ष पुराना रोग है। अनेक अनुभवी और वयोवृद्ध वैद्य बहुत-सा धन मेहनताने के रूप में लेकर चले गये, पर इलाज करने में कोई सफल नहीं हुआ। यह युवा, अनुभवहीन व्यक्ति क्या चिकित्सा करेगा? व्यर्थ धन क्यों बरबाद करें?

द्वारपाल ने जब यही बात जीवक को आ सुनायी तब जीवक ने कहा, मुझे कोई अग्रिम पारिश्रमिक न दें। जब ठीक हो जाएं तो ही पारिश्रमिक दें और वह भी जितना चाहें उतना ही दें।

यह सुन कर सेठानी ने जीवक को भीतर बुला लिया। जीवक ने रोग की जांच की और चिकित्सा के लिए पसर भर घी मांगा। उसे घी मिला। उसने घी में कुछ एक औषधियां मिला कर उसे पकाया और सेठानी को चित्त लेटा कर उसके नथुनों में डाल दिया। नाक में डाला गया घी मुंह के रास्ते से निकल आया। सेठानी ने उसे पीकदान में थूका और दासी को हुक्म दिया कि उसे किसी बर्तन में रख ले, काम आयेगा।

जीवक यह देख कर बहुत उदास हुआ। जो सेठानी इस गंदे घी को फिंकवाती नहीं बल्कि बर्तन में रखवाती है, वह कितनी कृपण है। ठीक होने पर मुझे क्या मेहनताना देगी? इस घी में मेरी जितनी कीमती औषधियां पड़ी हैं, उतना पारिश्रमिक पाना भी कठिन दीखता है। सेठानी जीवक के मन के भाव ताड़ गयी। उसने जीवक को समझाया कि वह एक श्रेष्ठि-भार्या है, कुशल गृहिणी है। किफायतगिरी और संयम उसमें कूट-कूट कर भरा होना स्वाभाविक है। किसी भी काम की वस्तु को फेंक नहीं देना चाहिए। यह गंदा घी खाने के काम नहीं आयेगा परंतु दास-दासियों के पैर मलने के काम आ सकता है, दीपक जलाने के काम आ सकता है। इसीलिए बर्तन में रखवाया है। तुम चिंता न करो, यदि मैं निरोग हो गयी तो तुम्हारे पारिश्रमिक में कमी नहीं आयेगी।

और वह निरोग हो गयी। सात वर्ष का पुराना रोग जीवक के एक ही बार के उपचार से दूर हो गया। सेठानी बड़ी प्रसन्न हुई। उसने जीवक को चार हजार मुद्राएं दी। मां को रोग-मुक्त देख कर पुत्र बहुत प्रसन्न हुआ। उसने अपनी ओर से जीवक को चार हजार मुद्राएं दी। सास को स्वस्थ हुआ देख कर बहू बहुत प्रसन्न हुई। उसने अपनी ओर से जीवक को चार हजार मुद्राएं भेंट दी। पत्नी को स्वस्थ-प्रसन्न देख कर श्रेष्ठि आह्लादित हुआ। उसने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



जीवक को चार हजार मुद्राएं ही नहीं दी, एक दास और एक दासी भी दी और यात्रा के लिए अश्व-जुड़ा एक रथ भी प्रदान किया।

इतना सारा धन लेकर जीवक राजगृह लौटा। अपनी शिक्षा की पहली कमाई पिता अभयकुमार को समर्पित करके उसे नमस्कार किया। अभय राजकुमार उसे वापिस आया देख कर अत्यंत प्रसन्न हुआ और उसकी प्रथम कमाई उसी को लौटाते हुए बोला – मेरे महल के अहाते में ही घर बना कर रहो। जीवक वहीं घर बनवा कर रहने लगा। उस कमाई का कुछ हिस्सा तक्षशिला में अपने आचार्य को भिजवा दिया।

## भगंदर का रोगी बिंबिसार

उन दिनों महाराज बिंबिसार को भगंदर का रोग था। धोतियां खून से सन जाती थीं। अंतःपुर की मुँहलगी रानियां उपहास करतीं, इस समय महाराज को ऋतुकाल आया है, महाराज रजस्वला हुए हैं। अब महाराज को फूल उत्पन्न हुआ है, जल्द ही महाराज प्रसव करेंगे, आदि-आदि।

महाराज बिंबिसार बड़ा लज्जित होता। पर क्या करता? लाचार था। उसने अभय राजकुमार से कहा कि कोई अच्छा वैद्य ढूंढ कर लाए जो उसका उपचार कर सके। अभय राजकुमार ने तरुण जीवक की चिकित्सा कराने का सुझाव दिया। महाराज ने स्वीकृति दी। जीवक ने चिकित्सा की। एक ही लेप द्वारा भगंदर का पुराना रोग ठीक हो गया।

महाराज ने प्रसन्न हो पांच सौ नारियों को नख-शिख तक अलंकृत कर, वे सारे आभूषण-अलंकार उतरवा, जीवक को पुरस्कारस्वरूप दे दिये।

जीवक ने कहा – आप मेरे उपकार को स्मरण करें, यही मेरे लिए पर्याप्त है।

इस पर महाराज बिंबिसार ने जीवक से कहा – आज से तुम मेरी और मेरे रनिवास की तथा भगवान बुद्ध और उनके भिक्षुसंघ की सेवा-चिकित्सा करो। मगधराज के इस प्रस्ताव को जीवक ने नतमस्तक हो प्रसन्न चित्त से स्वीकार किया। राजघराने का उपचारक होने के कारण राजवैद्य के रूप में उसकी प्रसिद्धि हुई। भगवान का उपचारक होने के कारण उसका भाग्योदय हुआ। वह धर्म के संपर्क में आया। मुक्तिपथ के संपर्क में आया।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



## जीवक उपासक हुआ

भगवान के संपर्क में आने पर एक दिन उसने भगवान से किये गये प्रश्न का समुचित उत्तर पा कर अत्यंत संतुष्ट-प्रसन्न हुआ और भावविभोर होकर बोला – मैं भगवान की शरण ग्रहण करता हूं, धर्म तथा भिक्षुसंघ की भी शरण ग्रहण करता हूं। भगवान आज से मुझे अंजलिबद्ध शरणागत उपासक के रूप में स्वीकार करें। वह भगवान का निजी उपचारक ही नहीं, अत्यंत श्रद्धालु उपासक शिष्य भी हुआ।

स्रोतापन्न जीवक, राजवैद्य जीवक, महाभिषक (महावैद्य) और महासल्लकत्ता (शल्यकर्ता, सर्जन) भगवान के संसर्ग में आते ही समझ गया कि मैं तो केवल शारीरिक रोगों की चिकित्सा करके और जहां आवश्यक हो वहां शल्यक्रिया करके रोगी को शारीरिक रोग से मुक्त करता हूं, परंतु भगवान तो जन्म-जन्मांतरों के दुखियारे लोगों के मनोविकारों को दूर करने की और विकार-ग्रंथियों को काट फेंकने की अनमोल विद्या सिखा कर भवरोग से नितांत मुक्त करते हैं। भगवान का शिष्य हो कर उसने भगवान की धर्म-औषधि का स्वयं सेवन किया।

उसने अपने भीतर संचित भवसंस्कारों की विदर्शना करते-करते उनमें से अधोगति की ओर ले जाने वाले सभी कर्म-संस्कारों से मुक्ति पा ली। परिणामतः अनित्य धर्मा शरीर और चित्त के परे नित्य धर्मा शाश्वत ध्रुव अमृत अवस्था का साक्षात्कार कर स्रोतापत्ति फल प्राप्त कर लिया और आर्य हो गया।

## मस्तिष्क पर शल्यक्रिया

उस समय राजगृह के श्रेष्ठि को भी पुराना सिर-दर्द था। उसने सभी विख्यात वैद्यों से चिकित्सा करवायी, पर्याप्त हिरण्य मुद्राएं व्यय कीं परंतु कोई भी वैद्य उसका रोग दूर नहीं कर सका। सभी वैद्यों ने हाथ ऊपर उठा दिया, जवाब दे दिया और उसकी शीघ्र मृत्यु होने की घोषणा कर दी।

कुछ ने कहा कि पांचवें दिन श्रेष्ठि गृहपति मर जायगा, दूसरों ने कहा सातवें दिन। राजगृह के नैगम के मन में आया कि यह श्रेष्ठि गृहपति राजा और निगम का भी बहुत काम करने वाला है। इसकी मृत्यु से अपूरणीय क्षति हो जायगी, अतः इसका रोग किसी तरह भी दूर होना चाहिए। राजा की सेवा में नियुक्त तरुण राजवैद्य जीवक इस काम के लिए उपयुक्त व्यक्ति है। क्यों न हम इसकी चिकित्सा हेतु जीवक के लिए राजा बिंबिसार

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



की अनुज्ञा प्राप्त करें। नैगम ने राजा के पास जाकर अनुरोध किया कि यह श्रेष्ठि गृहपति देव का और निगम का भी बहुत काम करने वाला है, रोगग्रस्त है और सभी वैद्यों ने उसे जवाब दे दिया है। आप जीवक को उसकी चिकित्सा के लिए अनुज्ञा देने की कृपा करें। राजा ने जीवक को श्रेष्ठि की चिकित्सा का आदेश दिया।

जीवक राजा की आज्ञानुसार श्रेष्ठि गृहपति के पास पहुँचा, उसके रोग को देखा-परखा और उससे बोला कि गृहपति यदि मैं तुम्हें रोग मुक्त कर दूं तो तुम मुझे पुरस्कार में क्या दोगे? गृहपति ने उत्तर दिया, आचार्य मेरा सारा धन तुम्हारा है, मैं तुम्हारा दास हूं। जीवक ने चिकित्सा आरंभ करने से पहले उसके सामने यह बात रखी कि तुम्हें अपनी चारपाई पर सात महीने तक एक ही करवट में लेटना पड़ेगा, दूसरे सात महीने दूसरी करवट में और तीसरे सात महीने पीठ के बल उतान लेटना पड़ेगा। गृहपति ने जीवक की शर्त मंजूर कर ली। जीवक ने उसका उपचार आरंभ किया।

उसने श्रेष्ठि को चारपाई पर लिटाकर उसे चारपाई से बांध दिया और शल्यक्रिया करके उसकी खोपड़ी खोल दी, उसने खोपड़ी से दो जंतु निकालकर लोगों को दिखाए और कहा कि देखो ये दो जंतु हैं, एक बड़ा और दूसरा छोटा। जिन आचार्यों ने यह कहा कि श्रेष्ठि पांचवें दिन मर जायगा, उन्होंने इस बड़े जंतु को देखा था जो पांच दिन के अंदर इस श्रेष्ठि के सिर की गुद्दी चाट लेता और गुद्दी के चाट लेने पर गृहपति नहीं बचता। उन्होंने ठीक ही कहा था। जो आचार्य यह कहते थे कि श्रेष्ठि सातवें दिन मरेगा, उन्होंने इस छोटे कीड़े को देखा था जो सात दिन में गुद्दी चाट लेता और गुद्दी चाट लेने पर गृहपति नहीं बचता। उन्होंने भी ठीक ही कहा था। जीवक ने उन कीड़ों को निकाल, खोपड़ी जोड़ दी और ऊपर से चमड़ी को सीकर उस पर लेप लगा दिया।

एक सप्ताह बीतने पर श्रेष्ठि गृहपति ने जीवक से कहा कि वह सात महीने एक ही करवट में नहीं लेट सकता। जीवक ने उसे सात महीने तक एक ही करवट में लेटने की शर्त स्वीकार करने की याद दिलाई। परंतु श्रेष्ठि बोला कि मैंने लेटने का वचन दिया था, ठीक है, परंतु मेरे लिए यह संभव नहीं। मैं लेट नहीं सकता, भले ही मैं मर जाऊं। जीवक ने उसे दूसरी करवट सात महीने लेटने के लिए कहा। एक सप्ताह बाद श्रेष्ठि ने फिर वही परेशानी बतायी और सात महीने लेटने से इनकार कर दिया। जीवक ने कहा तो फिर सात महीने उतान लेटो। सप्ताह बाद श्रेष्ठि ने फिर मना कर दिया। जीवक ने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



उसे फिर उसके लेटने के वचन की याद दिलाई तो उसने प्रत्युत्तर दिया कि मैं मर सकता हूं, सात महीने लेट नहीं सकता। जीवक ने उसे आश्वस्त करते हुए उससे कहा कि अब आपको लेटने की आवश्यकता नहीं है। यदि मैंने आपसे सात महीने लेटने का वचन नहीं लिया होता तो आप इतना भी नहीं लेटते। उठो, अब आप निरोग हो गये।

तीन सप्ताह में श्रेष्ठि पूर्णतया रोगमुक्त हो गया। जब जीवक ने उसे अपने पुरस्कार की याद दिलायी तो श्रेष्ठि ने फिर दुहराया कि आचार्य मेरा सारा धन आपका और मैं आपका दास। जीवक ने प्रत्युत्तर में कहा कि नहीं गृहपति आप अपनी सम्पत्ति के स्वामी, आपका धन न तो मेरा और न आप मेरे दास। मैं राज्यवैद्य हूं इसलिए बस इतना कीजिए कि राजा को सौ हजार मुद्राएं दे दीजिए और मुझे भी सौ हजार दे दीजिए। श्रेष्ठि ने प्रसन्न चित्त से सौ हजार मुद्राएं राजा को और सौ हजार जीवक को दे दी।

**अँतड़ी में गांठ**

वाराणसी का श्रेष्ठि अपने पुत्र की अस्वस्थता से बहुत संत्रस्त था। उसके पुत्र को मक्खचिका (सिर के बल घुमरी काटना) खेलते हुए अँतड़ी में गांठ पड़ जाने का रोग था। इस रोग के कारण उसे (यवागू) खिचड़ी, भात आदि कुछ भी खाया हुआ पचता नहीं था। पेशाब, पाखाना भी उसे ठीक से नहीं होता था। वह कृश, रुक्ष, दुर्वर्ण, पीला और कंकालमात्र रह गया था। पिता ने चिंताग्रस्त हो सोचा मेरे पुत्र को ऐसा रोग हो गया, जिससे कुछ भी नहीं पचता है। क्यों न मैं राजगृह जाकर राजा बिंबिसार से मेरे पुत्र की चिकित्सा के लिए राजवैद्य जीवक की मांग करू।

वह राजगृह जाकर मगधराज बिंबिसार से मिला और अपने पुत्र के असाध्य रोग का विवरण देते हुए उनसे जीवक को पुत्र का उपचार करने का आदेश देने का निवेदन किया। राजा ने जीवक को वाराणसी जाकर श्रेष्ठि पुत्र के उपचार का आदेश दिया। वह वाराणसी जाकर श्रेष्ठि पुत्र से मिला और उसकी बीमारी को देखा समझा। उसने घर में से लोगों की भीड़ को हटाया, कनात घिरवाया और उसे खंभे में बँधवाया। उसने उसकी भार्या को सामने कर, शल्य क्रिया द्वारा उसके पेट को चीर कर अँतड़ी की गांठ को बाहर निकाला। उसने उसे उसकी भार्या को दिखाते हुए बताया कि देखो अपने स्वामी के इस रोग को, इस गांठ के कारण ही कुछ खाया-पीया उसे पचता नहीं था। जीवक ने उसकी गांठ को सुलझा कर उसकी अँतड़ियों को

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



भीतर डाला और चमड़े को सीकर उसके ऊपर लेप लगा दिया।

वाराणसी का श्रेष्ठि पुत्र कुछ दिनों में ही रोगमुक्त हो गया। श्रेष्ठि ने कौमारभृत्य जीवक को सोलह हजार मुद्राओं से पुरस्कृत किया। जीवक राजगृह लौट आया।

**तथागत की चिकित्सा**

एक समय भगवान का शरीर विकारग्रस्त था। उन्होंने आनन्द को सूचित किया कि तथागत का शरीर विकारग्रस्त है। तथागत को विरेचन (जुलाब) की आवश्यकता है। आनन्द ने जीवक के पास जाकर उसे तथागत के शरीर की विकारग्रस्तता और विरेचन की आवश्यकता का विवरण दिया। जीवक ने आनन्द को तथागत के शरीर को कुछ दिनों के लिए स्निग्ध करने का परामर्श दिया। तथागत का शरीर स्निग्ध हो जाने के पश्चात जीवक ने सोचा कि मेरे लिए यह उचित नहीं है कि भगवान को साधारण विरेचन दूं। उसने तीन उत्पल हस्त को नाना औषधियों से भावित कर एक उत्पल हस्त भगवान को देकर उनसे निवेदन किया कि भगवान पहले इस उत्पल हस्त को सूंघे, यह भगवान को दस बार जुलाब लगाएगा। तत्पश्चात इस दूसरे उत्पल हस्त को सूंघे, यह भी दस बार जुलाब लगाएगा। अंत में तीसरे उत्पल को भी सूंघने पर दस बार जुलाब आएगा। इस प्रकार भगवान को कुल तीस जुलाब होंगे। भगवान को तीस जुलाब की औषधि देकर जीवक ने भगवान का अभिवादन किया और प्रदक्षिणा कर वहां से प्रस्थान किया। मुख्य द्वार से बाहर निकलने पर जीवक ने सोचा कि मैंने भगवान को तीस जुलाब की औषधि दी है। भगवान दोषग्रस्त हैं। उन्हें तीस नहीं, उनतीस जुलाब होंगे। जब भगवान जुलाब हो जाने पर नहायेंगे तो उन्हें एक जुलाब फिर होगा।

भगवान ने जीवक के चित्त के वितर्क को जान लिया। उन्होंने आनन्द से स्नान हेतु गर्म जल तैयार करवाया। इसी समय जीवक पुनः लौट आया और भगवान के पास जाकर अनुरोध किया कि भगवान स्नान करें। भगवान ने गर्म जल से स्नान किया। भगवान को एक और तीसवां विरेचन हुआ। तीस विरेचन पूरे हो जाने पर जीवक ने भगवान से निवेदन किया कि भगवान का शरीर जब तक पूर्ण स्वस्थ नहीं हो जाता है, मैं आपको जूस पिंडपात देता रहूंगा। थोड़े ही समय में भगवान का शरीर दोषमुक्त हो गया।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



## अवंति नरेश का पांडुरोग

उस समय अवंतिनरेश चंड प्रद्योत को पांडुरोग की बीमारी थी। उसने सभी प्रसिद्ध वैद्यों से अपना उपचार कराया लेकिन उसकी बीमारी ठीक नहीं हुई। उसकी बीमारी में पर्याप्त धन भी व्यय हुआ परंतु सब बेकार। अंततोगत्वा उसने मगधनरेश बिंबिसार के पास अपना दूत भेज कर उनसे निवेदन किया कि वे अपने उपचारक जीवक कौमारभृत्य को उसके उपचार हेतु उज्जयनी (उज्जैन) भेजने का आदेश दें। बिंबिसार ने जीवक को उज्जयनी (उज्जैन) जाकर प्रद्योत की चिकित्सा करने की आज्ञा दी।

जीवक उज्जयनी (उज्जैन) पहुँच कर राजा प्रद्योत से मिला और उसकी बीमारी को देखा परखा। सब कुछ समझ कर उसने प्रद्योत से निवेदन किया कि देव मैं घी में दवा पका कर दूंगा और आप उस घी का सेवन करें। राजा प्रद्योत ने बताया कि उसे घी से घृणा है, घी को छोड़ कर तुम मेरी चिकित्सा के लिए कोई भी दवा दो, मैं उसका सेवन करूंगा। जीवक जानता था कि घी ही उसके रोग का एकमात्र उपचार है। घी के बिना वह रोगमुक्त नहीं हो सकता। अत: उसने निश्चय किया कि घी को कषाय वर्ण, कषाय गंध और कषाय रस में पकाऊंगा, जिससे प्रद्योत को घी का पता न चले। परंतु घी सेवन के पश्चात पाचन प्रक्रिया में प्रद्योत को उबांत का अनुभव होगा। प्रद्योत बहुत चंड है। घी के कारण वह मुझे मरवा न डाले। अत: अपनी रक्षा का उपाय क्यों न मैं पहले ही कर लूं।

जीवक ने राजा प्रद्योत के पास जाकर अनुरोध किया कि देव हम वैद्य हैं। हम विशेष-विशेष मुहूर्त में औषधियों को ढूंढ़ते हैं। उन्हें खोदते हैं और संग्रह करते हैं। अच्छा हो कि देव अपनी वाहनशालाओं और नगरद्वारों पर आज्ञा दे दें कि जीवक जिस वाहन से चाहे उस वाहन से बाहर जाए, जिस द्वार से चाहे उस द्वार से जाए, जिस समय चाहे, उस समय जाए और जिस समय चाहे, उस समय अंदर आए। प्रद्योत ने सभी वाहनशालाओं और नगरद्वारों के द्वारपालों को यथानुकूल आज्ञा दे दी।

राजा प्रद्योत के पास 'भद्रवतिका' नामक एक हथिनी थी जो एक दिन में पचास योजन चलने वाली थी। जीवक प्रद्योत के पास औषधियों में पका हुआ घी ले गया और राजा से बोला, देव, कषाय पीयें। जीवक राजा को घी पिला कर हस्तिशाला में गया और भद्रवतिका हथिनी पर सवार होकर नगर से बाहर निकल गया। राजा को घी पीने से उवांत हो गया। उसने अपने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



आदमियों को बताया कि दुष्ट जीवक ने मुझे घी पिला दिया है, उसे पकड़ लाओ। सेवकों ने बताया कि जीवक भद्रवतिका पर सवार होकर नगर से बाहर चला गया है।

राजा ने अपने दास काक को जो एक दिन में साठ योजन चलने वाला था, जीवक को वापस लाने का आदेश देते हुए चेतावनी दी कि वैद्य लोग बड़े मायावी होते हैं, उसके हाथ का कुछ भी मत खा लेना। काक ने जीवक को राजगृह के मार्ग कौशांबी में कलेवा करते देखा। उसने जीवक से कहा कि मुझे प्रद्योत राजा ने तुम्हें उज्जयनी (उज्जैन) वापस लौटाने के लिए भेजा है। जीवक ने प्रत्युत्तर दिया कि मेरा कलेवा समाप्त हो जाने दो और लो तुम भी कलेवा कर लो। उस समय जीवक नख से दवा लगा आंवला खाकर पानी पी रहा था। उसने काक से भी आंवला खाकर पानी पीने का आग्रह किया। काक ने सोचा कि आंवला खाकर पानी पीने में कोई अनिष्ट नहीं दिखायी देता है। उसने आधा आंवला खाया और पानी पीया। उसे तुरंत वमन हो गया और आंवला बाहर निकल आया। काक बहुत भयभीत हुआ और उसने जीवक से पूछा कि वह बचेगा अथवा नहीं। जीवक ने उसे आश्वासन दिया कि काक डर नहीं, तू भी निरोग होगा और तेरा राजा भी। जीवक ने भद्रवतिका हथिनी काक को सौंप दी। काक उज्जैन लौट गया और जीवक राजगृह।

राजगृह में पहुँच कर जीवक ने मगधराज बिंबिसार को सारा विवरण कह सुनाया। बिंबिसार बोला कि अच्छा हुआ तुम उज्जयनी (उज्जैन) नहीं लौटे। राजा चंड है तुझे मरवा डालता। उधर राजा प्रद्योत रोग मुक्त हो गया। उसने जीवक के पास संदेश भेजा कि जीवक आए, मैं उसे पुरस्कृत करूंगा। जीवक ने प्रत्युत्तर में संदेश भिजवाया कि देव मेरा उपकार स्मरण रखें, मेरे लिए इतना ही पर्याप्त है।

उस समय अवंतिनरेश प्रद्योत को सौ हजार जोड़े दुशालों के साथ शिवि देश के एक अग्र उत्तमकोटि के दुशाले का जोड़ा प्राप्त हुआ था। राजा प्रद्योत ने उस शिवी-दुशाले के जोड़े को जीवक के लिए भेज दिया। जीवक के मन में आया कि राजा प्रद्योत द्वारा भेजे गए इस अग्र शिवी-दुशाले का अधिकारी पात्र भगवान अरहंत सम्यक संबुद्ध अथवा मगधनरेश बिंबिसार के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं हो सकता।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



## गृहस्थों द्वारा दिया गया चीवर का दान स्वीकार्य

जीवक शिवी-दुशाले के साथ भगवान बुद्ध के पास पहुँचा और उनसे एक वर प्राप्त करने का आग्रह करने लगा। भगवान ने जीवक को प्रत्युत्तर दिया कि तथागत तो वर से परे हैं। जीवक ने अपना आग्रह दुहराते हुए फिर निवेदन किया कि यदि मेरा वर निर्दोष एवं निष्कलंक हो तो! भगवान ने आश्वस्त होकर उत्तर दिया कि फिर मांगो अपना वर। जीवक ने भगवान से अनुरोध किया कि भगवान पांशुकूलिक (लत्ताधारी) हैं, तथा भगवान के साथ उनका भिक्षु संघ भी लत्ताधारी है। अवंतिनरेश प्रद्योत ने मुझे शिवि देश के दुशाले के जोड़े को पुरस्कार रूप में भेजा है। भगवान दुशाले के इस जोड़े को स्वीकार करने का अनुग्रह करें और भिक्षुसंघ को भी गृहस्थों द्वारा प्रदत्त चीवर को ग्रहण करने की अनुमति दें। भगवान ने शिवी-दुशाले को स्वीकार कर भिक्षुओं को आमंत्रित किया और उन्हें गृहपतियों के दिये चीवर के उपयोग की अनुज्ञा दे दी। उन्होंने भिक्षुओं से कहा कि जो भिक्षु पांशुकूलिक रहना चाहे वह पांशुकूलिक रहे, जो गृहपति का दिया चीवर धारण करना चाहे, वह गृहपति चीवर धारण करे। मैं दोनों के प्रयोग की अनुमति देता हूं।

राजगृह के लोगों ने सुना कि भगवान ने भिक्षुओं को गृहस्थ के दिये चीवर के प्रयोग की अनुमति दे दी है। यह जानकर लोग बहुत उल्लसित तथा उत्साहित हुए कि अब हम भिक्षुओं को दान देने का पुण्य अर्जित कर सकेंगे। राजगृह में एक ही दिन में अनेक सहस्र चीवर एकत्र हो गये। इसी प्रकार नगर के बाहर के जनपद प्रदेश के लोगों में भी चीवर दान की प्रेरणा जाग्रत हुई और गृहस्थ प्रदत्त चीवरों की प्रभूत राशि एकत्र हो गयी। उस समय भिक्षु संघ को कौशेय प्रावारक (उत्तरीय ओढ़नी) तथा कोजव (लंबे वालों वाला कंवल) का दान मिला था। काशीनरेश ने जीवक कौमारभृत्य को अपनी ओर से पांच सौ क्षौम (अलसी की छाल का बना हुआ कपड़ा) मिश्रित कपड़ा भेजा था। जीवक भगवान के पास पहुँचा और उन पांच सौ कंवलों को उनके चरणों में अर्पित करते हुए उनसे आग्रह किया कि मुझे काशीनरेश ने पांच सौ क्षौम मिश्रित ये कंवल भेजे हैं, भगवान इन कंवलों को ग्रहण करें जो चिरकाल तक मेरे सुख का कारण होगा। भगवान ने उन कंवलों को स्वीकार कर जीवक को अपनी धर्मदेशना द्वारा संतृप्त तथा संप्रहर्षित किया। उन्होंने भिक्षुओं को संबोधित करते हुए उन्हें छह प्रकार के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



चीवरों के प्रयोग की अनुज्ञा दी– कौषेय, क्षौम, कार्पासिक, सान, कंबल तथा भंग चीवर।

## आम्रवन विहार

एक बार जीवक के मन में यह आया कि मुझे दिन में दो-तीन बार भगवान की सेवा में जाना पड़ता है। मगधनरेश बिंबिसार द्वारा प्रदत्त वेणुवन विहार अति दूर है। मेरा आम्रवन समीपतर है, क्यों न मैं अपने आम्रवन में भगवान के लिए विहार बनवाऊं। उसने आम्रवन में रात्रि-स्थान, दिवस-स्थान, गृह, कुटी, मंडप आदि तैयार करवा, भगवान के लिए अनुकूल गंधकुटी बनवा दी। उस आम्रवन विहार को ताम्रवर्ण के प्राकार से घिरवा कर, चीवर तथा भोजन दान के साथ, उसे बुद्धप्रमुख भिक्षुसंघ को अर्पित कर दिया। यह आम्रवन राजगृह नगर के प्राकार तथा गृध्रकूट के बीच में स्थित था।

## उपासक के आचरण

एक समय भगवान राजगृह में जीवक के आम्रवन में विहार कर रहे थे। जीवक कौमारभृत्य उनके पास गया, उनका अभिवादन किया और एक ओर बैठ कर उनसे पूछा–

"भन्ते! क्या होने से उपासक होता है?

"जब व्यक्ति बुद्ध, धर्म तथा संघ की शरण ग्रहण कर लेता है तब वह उपासक कहलाता है।"

"भन्ते! क्या होने से उपासक शीलवान होता है?"

"जब उपासक प्राणिहत्या, अस्तेय, अब्रह्मचर्य, मिथ्यावाद तथा सुरामेरय आदि नशीले पदार्थों से विरत होता है तब वह उपासक शीलवान कहलाता है।"

"भन्ते! क्या होने से उपासक आत्महित में रत होता है, परहित में नहीं?"

"जब उपासक स्वयं श्रद्धा सम्पन्न होता है किंतु दूसरों को श्रद्धा सम्पन्न होने की प्रेरणा नहीं देता, स्वयं अर्थ-धर्म का ज्ञान प्राप्त कर धर्मानुसार जीवन व्यतीत करता है किंतु दूसरों को धर्मानुसार जीवन व्यतीत करने की कोई प्रेरणा नहीं देता तब वह आत्महित में रत होता है, परहित में नहीं।'

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



"भन्ते! क्या होने से उपासक आत्महित तथा परहित दोनों में रत होता है?"

"जब उपासक स्वयं श्रद्धा संपन्न होता है और दूसरों को भी श्रद्धा संपन्न बनने की प्रेरणा देता है, स्वयं शीलवान होता है और दूसरों को भी शीलवान बनने की प्रेरणा देता है, स्वयं त्यागी होता है और दूसरों को भी त्यागी बनने की प्रेरणा देता है, स्वयं भिक्षु दर्शन की कामना करता है और दूसरों को भी भिक्षु दर्शन की प्रेरणा देता है, स्वयं सद्धर्म श्रवण की कामना करता है और दूसरों को भी सद्धर्म श्रवण की प्रेरणा देता है, स्वयं धर्म धारण करता है और दूसरों को भी धर्म धारण करने की प्रेरणा देता है, स्वयं धर्म-मीमांसा करता है और दूसरों को भी धर्म-मीमांसा की प्रेरणा देता है, स्वयं अर्थ, धर्म का ज्ञान प्राप्त कर धर्मानुसार जीवन व्यतीत करता है और दूसरों को भी धर्मानुसार जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा देता है, तब वह आत्महित तथा परहित दोनों में रत होता है।"

## चंक्रमण और जंताघर

वैशाली में भिक्षुओं के लिए अच्छे-अच्छे भोजों का प्रचलन था। भिक्षु इन भोजों में अच्छे-अच्छे भोजन करके अस्वस्थ रहने लगे। जीवक कौमारभृत्य किसी काम से वैशाली गया। उसने भिक्षुओं को बड़ी संख्या में अस्वस्थ देखा। वह भगवान के पास गया और उनका अभिवादन कर उनसे बोला कि आजकल वैशाली में भिक्षुओं को अच्छे-अच्छे भोज देने का क्रम चल रहा है जिससे भिक्षु बड़ी संख्या में अस्वस्थ होने लगे हैं। अच्छा हो यदि भगवान भिक्षुओं के लिए चंक्रमण (टहलने की जगह) तथा जंताघर (स्नानघर) की अनुमति दे दें। इससे भिक्षु बीमार नहीं पड़ेंगे। भगवान ने जीवक को धर्मदेशना द्वारा उत्साहित किया और उसके प्रस्थान करने पर भिक्षुओं को संबोधित करते हुए उन्हें चंक्रमण और जंताघर की अनुमति दे दी।

## प्रव्रज्या की अयोग्यता

मगध राज्य में कुष्ठ, फोड़ा, चर्मरोग, मृगी और सूजन – इन पांचों बीमारियों का बहुत कोप था। इन बीमारियों से ग्रस्त लोग जीवक कौमारभृत्य के पास आते और उनसे चिकित्सा की प्रार्थना करते। जीवक अपनी अति व्यस्तता के कारण विवशता प्रकट करते हुए कहते कि मुझे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



मगधनरेश विंबिसार, उनके अंतःपुर, भगवान बुद्ध और भिक्षु संघ की सेवा में रहने के कारण अवकाश निकालना संभव नहीं। तब वे रोगग्रस्त लोग यह सोचने लगे कि ये शाक्यपुत्रीय श्रमण भिक्षु बन कर सुख का जीवन व्यतीत करते हैं। ये अच्छा भोजन करके अच्छे निवासों में अच्छी शैय्या पर अच्छी प्रकार सोते हैं। क्यों न हम भी भिक्षु बन कर इसी प्रकार का जीवन व्यतीत करें। तब भिक्षु भी हमारी सेवा करेगें और जीवक कौमारभृत्य भी चिकित्सा करेंगे।

भिक्षुओं ने उन्हें प्रव्रज्या दे दी। तब भिक्षु भी उनकी सेवा करते और जीवक भी उनकी चिकित्सा करते। परंतु रोगी भिक्षुओं की संख्या बढ़ने के कारण भिक्षु संघ की अपेक्षाएं भी बढ़ गयीं। वे रोगी के लिए पथ्य दीजिए, रोगी सेवक के लिए भोजन दीजिए, रोगी के लिए औषधि दीजिए आदि याचना करने लगे। जीवक भी भिक्षु संघ की सेवा में लगे रहने के कारण कभी-कभी राजा विंबिसार की सेवा में नहीं जा पाता।

पांच रोगों से पीड़ित एक व्यक्ति ने जीवक से अपने रोगों की चिकित्सा की प्रार्थना की। जीवक द्वारा व्यस्तता के कारण असमर्थता प्रकट करने पर उसने उसकी सारी सम्पत्ति का उसे स्वामी बनाने का वचन दिया। जीवक ने पुनः अपनी असमर्थता प्रकट की। उस रोगी व्यक्ति ने भिक्षु बन कर भिक्षु सेवा तथा जीवक सेवा उपलव्ध करने का निश्चय किया। भिक्षु संघ में जाकर उसने प्रव्रज्या मांगी और भिक्षुओं ने उसे प्रवज्या दे दी। तब भिक्षु तथा जीवक दोनों ने उसकी सेवा की। कुछ दिनों बाद वह रोग मुक्त हो गया। निरोग होने पर वह भिक्षु संघ छोड़ कर बाहर चला गया। जीवक ने उसे देखा और पूछा कि आर्य आप तो भिक्षु बन गए थे, फिर ऐसा क्यों किया। उस व्यक्ति ने सारी बात बता दी, यह बात सुन कर जीवक को बहुत दुःख, आश्चर्य और आक्रोश हुआ। उसके मन में यह प्रश्न उठा कि भिक्षु संघ ऐसे व्यक्ति को प्रव्रज्या क्यों देता है। वह भगवान के पास पहुँचा, उनकी वन्दना की और एक ओर बैठं कर भगवान से अनुरोध किया कि भिक्षु संघ कुष्ठ आदि पांच रोगों से पीड़ित व्यक्ति को प्रव्रज्या न दें। भगवान ने जीवक का अनुरोध स्वीकार कर लिया। जीवक ने भगवान की धर्मदेशना सुन संप्रहर्षित हो वहां से प्रस्थान किया। भगवान ने भिक्षुओं को संबोधित करते हुए कहा कि पांच रोगों से पीड़ित व्यक्ति को प्रव्रज्या नहीं देनी चाहिए। जो ऐसा करेगा, वह दुक्कट (दुष्कृत) दोप का अपराधी होगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



## चूलपंथक और महापंथक

दो भाई, महापंथक और चूलपंथक, अपने नाना के घर पर रहते थे। चूलपंथक बहुत छोटा था। महापंथक अपने नाना के साथ शास्ता की धर्मदिशना सुनने जाया करता था। शास्ता के पास जाते-जाते उसमें धर्म संवेग जाग्रत हुआ और उसने प्रव्रज्या लेने का विचार बनाया। उसने अपने नाना से निवेदन किया कि मैं प्रव्रज्या लेना चाहता हूं। मुझे प्रव्रज्या के लिए अनुमति दें। नाना ने कहा तात, तुम्हारी प्रव्रज्या संसार की सारी प्रव्रज्याओं से श्रेष्ठ हो, मैं तुम्हें प्रव्रज्या की अनुमति देता हूं। नाना ने महापंथक को शास्ता के पास ले जाकर, उनका अभिवादन कर उन्हें बताया कि यह मेरा नाती है और आपके पास प्रव्रजित होना चाहता है। शास्ता ने भिक्षाटन व्रती एक भिक्षु को उसे प्रव्रज्या देने का आदेश दिया। उसने उसे त्वचपंचक कर्म स्थान (केस, लोम, नाखून, दांत तथा त्वचा के अनित्य, अशुभ के लक्षण के वारे में) बताकर प्रव्रज्या दी। महापंथक ने बुद्ध वचन सीखकर और उपसंपदा के योग्य वयस्क होकर उपसंपदा प्राप्त की। उसने मनोयोगपूर्वक कर्मस्थान का अभ्यास करते हुए यथासमय अर्हत्व प्राप्त किया। ध्यानसुख में रहते हुए उसके मन में विचार आया कि यदि मैं चूलपंथक को भी यह सुख दे सकूं तो कितना अच्छा हो। वह नानाश्रेष्ठि के पास पहुँच कर उनसे बोला कि मैं आपकी अनुमति पाकर चूलपंथक को प्रव्रजित करना चाहता हूं। नाना की बुद्ध शासन में वड़ी आस्था थी। उन्होंने तुरंत अनुमति दे दी। स्थविर ने चूलपंथक को प्रव्रजित करा कर उसे शील में प्रतिष्ठापित करवाया। चूलपंथक कुछ सीखने में बहुत ढीला था। चूलपंथक चार महीने में यह गाथा भी नहीं सीख सका –

**पदुमं यथा कोकनदं सुगन्धं, पातो सिया फुल्लमवीतगन्धं।**
**अङ्गीरसं पस्स विरोचमानं, तपन्तमादिच्चमिवन्तलिक्खे'ति॥**

(संयुत्त निकाय १.१.१२३; अङ्गुत्तर निकाय २.५.१९५)

कश्यप सम्यक संबुद्ध के समय प्रव्रजित हो एक भिक्षु ने प्राज्ञ होकर एक दूसरे ढीले भिक्षु का सीखते समय उपहास किया था। इस उपहास से कुंठित होकर वह भिक्षु कुछ सीखने में सफल नहीं हो सका। इस अपराध के फलस्वरूप ही पहला भिक्षु चूलपंथक के रूप में जन्म लेकर कुछ सीखने में ढीला होने के कारण उपहास का पात्र वन रहा है। तव महापंथक ने यह कह कर कि चूलपंथक बुद्ध शासन के योग्य नहीं है, चार महीने में एक गाथा भी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



नहीं सीख सका, प्रव्रज्या के लक्ष्य पर कैसे पहुँच सकेगा, उसे विहार से बाहर कर दिया। चूलपंथक की बुद्ध शासन में श्रद्धा थी, उसे गृहस्थ जीवन में रुचि नहीं थी।

महापंथक उस समय भोजन निर्देशक थे। जीवक कौमारभृत्य ने अपने आम्रवन में जाकर माला सुगन्ध के द्वारा शास्ता की पूजा अभ्यर्थना की और धर्मदेशना सुनने के पश्चात महापंथक के पास पहुँच कर उनसे पूछा कि भन्ते, भगवान के साथ कितने भिक्षु हैं? उत्तर में पांच सौ भिक्षु सुन कर उसने बुद्धप्रमुख पांच सौ भिक्षुओं को दूसरे दिन अपने घर भिक्षा के लिए आमंत्रित किया। महापंथक ने उससे कहा कि चूलपंथक बहुत ढीला है और बुद्ध शासन में उसकी कोई प्रगति नहीं हुई है। उसे छोड़ कर शेष सभी भिक्षुओं का आमंत्रण मैं स्वीकार करता हूं।

यह सुन कर चूलपंथक ने सोचा कि थेर ने मुझे बाहर निकालकर इतने भिक्षुओं के लिए निमंत्रण स्वीकार किया है। निश्चय ही मेरे प्रति मेरे भाई का चित्त बदल गया है। अब इस शासन से मेरा क्या संबंध? गृहस्थ होकर दान आदि पुण्य कर्म करते जीवन व्यतीत करूंगा। दूसरे दिन सबेरे ही वह भिक्षु-जीवन त्याग करने के लिए बाहर निकला। शास्ता, यह जानकर कि चूलपंथक बाहर जा रहा है, प्रत्यूषकाल में लोकवीक्षण करते हुए उसके मार्ग के दरवाजे के ऊपर वाले कमरे में चंक्रमण करते रहे।

चूलपंथक शास्ता को देखकर उनके निकट गया, उनकी वन्दना की और उनके सम्मुख खड़ा हो गया। शास्ता ने उससे पूछा, चूलपंथक, तू इस समय कहां जा रहा है। चूलपंथक ने उत्तर दिया कि मेरे भाई ने मुझे बाहर निकाल दिया है इसलिए मैं भिक्षु-जीवन त्याग करने बाहर जा रहा हूं। शास्ता ने उसे आश्वासन देते हुए कहा, चूलपंथक तेरी प्रव्रज्या तो मेरे पास थी। अपने भाई द्वारा बाहर निकाले जाने पर तू मेरे पास क्यों नहीं आया? आ, मेरे साथ चल, तेरा गार्हस्थ्य से क्या संबंध? शास्ता ने अपने चक्रांकित हस्ततल को उसके सिर पर रखकर उसका करुणार्द्र स्पर्श किया। उसे अपने साथ ले जाकर गन्धकुटी के सामने बिठा दिया और उसे एक स्वच्छ-परिशुद्ध वस्त्र देकर उससे कहा कि 'रजोहरण-रजोहरण' बोलते हुए इस वस्त्र को यहीं बैठ कर मसलता रह। शास्ता भिक्षुसंघ से परिवृत्त हो जीवक के घर जाकर एक सज्जित आसन पर बैठे।

चूलपंथक द्वारा 'रजोहरण-रजोहरण' बोलकर वस्त्र को मसलते रहने के कारण वह वस्त्र मैला हो गया। उस मैले वस्त्र को देखकर चूलपंथक ने यह

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



समझा कि यह वस्त्र अत्यन्त स्वच्छ परिशुद्ध था परंतु आत्मभाव के कारण कितना मैला हो गया है! ओह! संस्कार कितना अनित्य है! चूलपंथक उदय-व्यय की विपश्यना करता रहा। शास्ता को समझते देर नहीं लगी कि चूलपंथक का चित्त विपश्यना में लीन है। उन्होंने चूलपंथक का मार्गदर्शन करते हुए उसे समझाया, चूलपंथक, वस्त्र के मैल को देखना पर्याप्त नहीं, तेरे अंदर राग का जो मैल है, उसे देख और उसे दूर कर। उन्होंने प्रकाश प्रज्वलित कर सामने बैठे हुए ये गाथाएं कहीं –

**रागो रजो न च पन रेणु वुच्चति,**
**रागस्सेतं अधिवचनं रजोति।**
**एतं रजं विप्पजहित्वा पण्डिता,**
**विहरन्ति ते विगतरजस्स सासने॥१॥**

**दोसो रजो न च पन रेणु वुच्चति,**
**दोसस्सेतं अधिवचनं रजोति।**
**एतं रजं विप्पजहित्वा पण्डिता,**
**विहरन्ति ते विगतरजस्स सासने॥२॥**

**मोहो रजो न च पन रेणु वुच्चति,**
**मोहस्सेतं अधिवचनं रजोति।**
**एतं रजं विप्पजहित्वा पण्डिता,**
**विहरन्ति ते विगतरजस्स सासने" ति॥३॥**

(महानिद्देस २०९)

– राग को धूल और रेणु नहीं कहा जाता है। तो भी राग मैल कहलाता है। वीतराग के शासन में इस मैल को त्यागकर भिक्षु मैलमुक्त रहता है। द्वेष को धूल और रेणु नहीं कहा जाता है। फिर भी द्वेष मैल है। वीतराग के शासन में इस मैल को त्याग भिक्षु मैलमुक्त रहता है। मोह को धूल और रेणु नहीं कहा जाता है। फिर भी मोह मैल है। वीतराग के शासन में इस मैल को त्यागकर भिक्षु मैलमुक्त रहता है।

गाथा के अंत में चूलपंथक ने मीमांसापूर्ण ज्ञान के साथ अर्हत्व प्राप्त किया। समवेत रूप से उसने तीन पिटकों का भी ज्ञान प्राप्त किया।

चूलपंथक द्वारा पूर्वकाल में राजा होकर नगर की परिक्रमा करते हुए अपने मस्तक के स्वेदबिंदुओं को परिशुद्ध वस्त्र से पोंछने के कारण वस्त्र मैला हो गया था। उसने उस समय उस मैले वस्त्र को देखकर यह सोचते हुए

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



कि शरीर पोंछने के कारण यह परिशुद्ध वस्त्र अपनी शुद्धता का संस्कार छोड़ मैला हो गया, संस्कार कितना अनित्य है, अनित्य बोध प्राप्त किया था। इस प्रकार 'मैल पोंछना' उसके लिए हेतु सिद्ध हुआ।

जीवक कौमारभृत्य अपने आम्रवन में भगवान के पास दक्षिणोदक लाया। शास्ता ने जीवक को देखकर पूछा कि क्या विहार में कोई भिक्षु है। महापंथक ने उत्तर दिया कि भन्ते विहार में कोई भिक्षु नहीं है। शास्ता ने जीवक को आदेश दिया। जीवक ने एक व्यक्ति को यह कह कर भेजा कि जा देखकर आ कि विहार में कोई भिक्षु है या नहीं।

यह सुन कर चूलपंथक के मन में आया कि मेरा भाई विहार में मेरे रहते हुए भी, मैं नहीं हूं, बोल रहा है। मैं विहार में अपनी उपस्थिति का भाव प्रकट करूंगा। उसने सारे आम्रवन को भिक्षुओं से भर दिया। चूलपंथक ने अपने ऋद्धिबल से समान रूप के एक हजार भिक्षुओं को बना दिया। उस व्यक्ति ने आम्रवन में इतने सारे भिक्षुओं को देखा और वापस जाकर जीवक को बताया कि आर्य सारा आम्रवन भिक्षुओं से भरा है। शास्ता ने उस व्यक्ति को कहा कि विहार जाकर चूलपंथक को बोलो कि तुम्हें शास्ता बुला रहे हैं। वहां जाकर उसके ऐसा कहने पर सहस्र मुखों से यह निकला कि मैं हूं चूलपंथक। उसने शास्ता को बताया कि वहां तो सभी चूलपंथक हैं। शास्ता ने उसे यह कह कर फिर वापस भेजा कि जो सबसे पहले बोले कि मैं हूं चूलपंथक, उसका हाथ पकड़ो और शेष सभी चूलपंथक अदृश्य हो जाएंगे। उसने वही किया। सभी एक सहस्र चूलपंथक अदृश्य हो गए। स्थविर चूलपंथक उस व्यक्ति के साथ शास्ता के पास आए। शास्ता ने भोजनोपरान्त जीवक को बुलाकर कहा– जीवक, तुम चूलपंथक का भिक्षापात्र लो, वह तुम्हारा पुण्यानुमोदन करेगा। जीवक ने ऐसा ही किया। चूलपंथक स्थविर ने तरुण सिंह की भांति सिंहनाद करते हुए तीन पिटक के पाठ द्वारा उसका पुण्यानुमोदन किया।

सायंकाल सारे भिक्षु एकत्र होकर शास्ता की गुणकथा कहने लगे। महापंथक ने जिस चूलपंथक को मंदबुद्धि कह कर विहार से बाहर कर दिया था, उसे सम्यक सम्बुद्ध ने एक ही भोजन वेलांतर्गत मीमांसापूर्ण ज्ञान सहित अर्हत्व प्रदान किया, तीन पिटकों का संपूर्णज्ञान भी दिया। ओह, बुद्धों की शक्ति अप्रतिम है! शास्ता ने भिक्षुओं की धर्मसभा को बताया कि चूलपंथक अभी नहीं, पहले भी मन्दबुद्धि था और मैं न केवल अभी उसका आश्रय हूं, पहले भी उसका आश्रय था। पहले मैंने उसे लौकिक कुटुम्ब का स्वामी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



बनाया था, अब उसे लोकोत्तर कुटुम्ब का स्वामी बना दिया है, उन्होंने चूलपंथक की अतीत कथा को सुना कर यह गाथा कही –

**अप्पकेनापि मेधावी, पाभतेन विचक्खणो।**
**समुट्ठापेति अत्तानं, अणुं अग्गिव सन्धम'न्ति॥**

(धम्मपद अट्ठकथा १.२५)

– विलक्षण बुद्धिवाला अणु अग्नि के महाअग्नि बनने के समान अपने को अल्पता से महानता में प्रतिष्ठापित करता है।

## तथागत के चोट की मरहम-पट्टी (व्रण-बंधन)

एक बार देवदत्त ने अजातशत्रु से मिलकर शास्ता की हत्या का षडयंत्र रचा। उसने राजगृह में गध्रकूट पर्वत पर चढ़ कर शास्ता के ऊपर एक बड़ी शिला लुढ़का दी। वह लुढ़कती शिला दो शिखरों के बीच फंस गयी। शिखरों के बीच टकराने के कारण उस शिला से छिटका हुआ एक टुकड़ा शास्ता के पैर में जा लगा। रक्तस्राव होने लगा। पीड़ा भी होने लगी। इस चोट की अवस्था में शास्ता ने जीवक कौमारभृत्य के आम्रवन की ओर जाना चाहा। उन्होंने भिक्षुओं को निर्देश दिया कि मुझे वहां ले चलो। भिक्षु भगवान को जीवक के आम्रवन में ले गये।

जीवक ने शास्ता के व्रण को देखकर उसके उपचार हेतु एक तीक्ष्ण दवा के साथ व्रण को बांध दिया और शास्ता से निवेदन किया – भन्ते, मैंने नगर में एक व्यक्ति को दवा दी है। मैं अभी उसके पास जाकर वापस आऊंगा। मेरे वापस आने तक यह दवा बँधी रहने दीजिए। वह नगर जाकर उस व्यक्ति का काम करके समय पर वापस नहीं आ सका और आम्रवन का द्वार बंद हो गया। उसके मन में आया कि मैंने बड़ी गल्ती कर दी। मैंने औरों की तरह शास्ता के व्रण को भी तीक्ष्ण दवा की पट्टी बांध दी। यह पट्टी के खोलने का समय है। यदि पट्टी नहीं खुली तो भगवान के शरीर में तीक्ष्ण दवा के प्रभाव से रात भर जलन होता रहेगा। उसी क्षण शास्ता ने आनन्द स्थविर को बुलाकर उसे निर्देश दिया कि जीवक द्वार बन्द होने से पहले वापस नहीं आ सका। उसके मन में आ रहा है कि यह व्रण-बंधन के खोलने का समय है। तुम उसे खोल दो। आनन्द ने खोल दिया। व्रण पेड़ की खाल की तरह जल गया। अरुणोदय से पहले ही जीवक ने क्षिप्रता से शास्ता के पास आकर पूछा कि भगवान क्या व्रण बंधन के कारण शरीर में जलन हुआ था। शास्ता ने उत्तर दिया – जीवक, तथागत की सारी दग्धता बोधिप्राप्ति में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



ही शान्त हो गयी थी। उन्होंने धर्मदेशना करते हुए यह गाथा कही –

**गतद्धिनो विसोकस्स, विप्पमुत्तस्स सब्बधि।**
**सब्बगन्थप्पहीनस्स, परिळाहो न विज्जति॥**

(धम्मपद ९०)

जिसकी सारी गतियां समाप्त हैं, जो शोक मुक्त, विमुक्त तथा बन्धनमुक्त है उसकी सारी दग्धता शांत हो जाती है।

## अजातशत्रु को भगवान के पास ले जाना

एक समय भगवान राजगृह में जीवक कौमारभृत्य के आम्रवन में साढ़े बारह सौ भिक्षुओं के भिक्षु महासंघ के साथ विहार कर रहे थे। उस दिन उपोसथ की रात में चातुर्मास की आश्विन पूर्णिमा की कौमुदी चतुर्दिश फैल रही थी। मगधनरेश अजातशत्रु अमात्यों से घिरा अपने प्रासाद के ऊपरी तल पर बैठा हुआ था। चांदनी रात से उल्लसित होकर उसने यह उदान कहा – 'अहो कैसी रमणीय चांदनी रात है? कैसी अभिरूप चांदनी रात है! कैसी दर्शनीय चांदनी रात है! कैसी प्रासादिक चांदनी रात है! किस श्रमण या ब्राह्मण की उपासना करें जिससे हमारा चित्त प्रसन्न हो?' ऐसे मनोरम वातावरण में भी पितृहत्या के दोष के कारण उसका चित्त प्रसन्न नहीं था।

राज्य मंत्रियों ने एक-एक कर अपने-अपने आचार्य – पूर्ण काश्यप, मक्खली गोसाल, अजित केसकंबल, पकुधकच्चायन, संजय वेलट्ठिपुत्त, निगंठनाथपुत्त – का नाम लिया। मगधराज वैदेहिपुत्र अजातशत्रु मौन रहा। अपने मंत्रियों द्वारा वह इन आचार्यों की प्रशंसा सुन कर प्रभावित नहीं हुआ, क्योंकि वह इन छहों आचार्यों से मिल चुका था और इनमें से किसी की ओर आकर्षित नहीं हुआ था। वस्तुतः वह भगवान बुद्ध के उपदेश सुनने को जाना चाहता था। परंतु भगवान की हत्या करने के षड़यंत्र रचने वाले देवदत्त का साथ देने की अपराध ग्रंथि के कारण वह अपनी आंतरिक भावना व्यक्त नहीं कर पा रहा था। वह जानता था कि राजवैद्य जीवक भगवान का उपचारक ही नहीं, श्रद्धालु शिष्य भी है। अतः चाहता था कि भगवान के सान्निध्य का लाभ लेने का प्रस्ताव जीवक की ओर से आये। परंतु जीवक पास में चुपचाप बैठा था। अजातशत्रु जीवक से बोला, "सौम्य जीवक! तुम मौन क्यों हो?"

यहां एक बात ध्यान देने योग्य है कि मंत्रियों ने अपने-अपने आचार्य का परिचय देते हुए कहा – "वे 'सङ्घी' हैं। यानी बृहद शिष्यसंघ के आचार्य

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



हैं। 'गणी च गणाचरियो' हैं यानी समाज के एक बड़े समूह के अग्रणी हैं, उनके आचार्य हैं। 'ञातो' हैं, 'यसस्सी' हैं यानी समाज में प्रसिद्ध हैं और यशस्वी हैं। 'तीर्थंकर' हैं, 'साधु सम्मतो बहुजनस्स' – समाज के बहुत बड़े समुदाय द्वारा सम्मानित हैं। 'रत्तञ्ञू चिरपब्बजितो' दीर्घकाल से प्रव्रजित और अनुभवी वयोवृद्ध हैं।" उन्होंने अपने-अपने तीर्थ यानी सम्प्रदाय स्थापित किए थे। इसलिए तीर्थंकर के बिरुद से प्रसिद्ध थे। परंतु भगवान बुद्ध ने कोई तीर्थ स्थापित नहीं किया था। उनके सभी शिष्य यह जानते थे। अतः उनका प्रशस्ति परिचय इन्हीं शब्दों में दिया जाता था – *"इतिपि सो भगवा अरहं सम्मासम्बुद्धो विज्जाचरणसम्पन्नो सुगतो लोकविदू अनुत्तरो पुरिसदम्मसारथि सत्था देवमनुस्सानं बुद्धो भगवाति।"* जीवक ने यही परिचय देते हुए उत्तर दिया, "देव! भगवान अरहत सम्यक सम्बुद्ध हमारे आम्रवन में साढ़े बारह सौ भिक्षुओं के भिक्षु महासंघ के साथ विहार कर रहे हैं। उनका ऐसा मंगल यश है। 'भगवान अरहत सम्यक संबुद्ध हैं। विद्या और आचरण से युक्त, सुगत, लोकविद, पथभ्रष्ट मनुष्यों को सन्मार्ग पर लाने वाले अनुपम सारथी हैं तथा देव मनुष्यों के शास्ता हैं।' उनकी धर्मदेशना सुन कदाचित आपका चित्त प्रसन्न हो जाय।" अजातशत्रु यही सुनना चाहता था। अतः उसने तुरंत आदेश दिया, "सौम्य जीवक! मेरा हस्ति दल सज्जित कराओ।"

मगधनरेश ने पांच सौ हाथियों पर रानियों को आरूढ़ कर, स्वयं श्रेष्ठ राजहाथी पर आरूढ़ हो दण्डदीप के प्रकाश में बड़े राजकीय वैभव के साथ राजगृह से जीवक के आम्रवन के लिए प्रस्थान किया। आम्रवन के निकट की स्तब्धता से भयभीत होकर उसे रोमांच हो आया। वह नहीं समझता था कि यह सहस्राधिक साधकों की 'सामूहिक साधना' है और 'मौन' साधकों का आभूषण है। अतः भय से उद्विग्न तथा रोमांचित हो उसने जीवक से पूछा "सौम्य जीवक, तुम कहीं मुझसे वंचना तो नहीं कर रहे हो? कहीं मुझे धोखा तो नहीं दे रहे हो? कहीं मुझसे विश्वासघात तो नहीं कर रहे हो और कहीं मुझे मेरे शत्रुओं के हाथ में तो नहीं दे रहे हो? साढ़े बारह सौ भिक्षुओं के महासंघ का न खांसने का शब्द, न थूकने का शब्द और न कोई अन्य शब्द!" जीवक ने उत्तर दिया, "महाराज, आप डरें मत, मैं आपसे वंचना नहीं कर रहा हूं, न आपको शत्रुओं के हाथ में दे रहा हूं। महाराज आगे चलें। यह रहा मंडप और उसमें जलते दीपकों का प्रकाश।"

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



अजातशत्रु आश्वस्त हो जहां तक हाथी का मार्ग था, हाथी पर चढ़ कर, फिर हाथी से उतर पैदल चलकर मंडप-द्वार पर पहुँचा और जीवक से कहा, "सौम्य जीवक, भगवान कहां हैं?" जीवक ने उत्तर दिया, "महाराज, भगवान यह रहे, भिक्षु संघ के सम्मुख मध्य-स्तंभ के सहारे पूर्वाभिमुख बैठे हुए।" अजातशत्रु भगवान के पास गया, एक पार्श्व में खड़ा हो गया। उसने निर्मल जलाशय की भांति शांत, निस्तब्ध भिक्षुसंघ को देखकर उत्साहित हो यह उदान कहा, "मेरा कुमार उदयभद्र इस शांति से युक्त हो, जिस शांति से युक्त यह भिक्षु संघ है। भन्ते, मेरा कुमार उदयभद्र मुझे बहुत प्रिय है, मेरा कुमार उदयभद्र भी इस शांति से युक्त हो जिस शांति से युक्त यह भिक्षु संघ है।" वस्तुतः उसे यह भय था कि जैसे उसने अपने पिता महाराज बिंबिसार की हत्या कर दी थी, वैसे ही उसका पुत्र भी किसी अशांत और उद्विग्न अवस्था में मेरी हत्या न कर दे। अजातशत्रु भगवान का अभिवादन कर और भिक्षुसंघ के प्रति अंजलि करबद्ध हो एक ओर बैठ गया। उसने भगवान से अनुरोध किया कि यदि भगवान मुझे प्रश्नोत्तर की आज्ञा दें तो मैं भगवान से कुछ पूछूं। भगवान ने कहा, "पूछो।" इस प्रश्नोत्तर में भगवान ने श्रामण्य-फल को विवरण सहित समझाया।

इसे सुन कर उसने प्रसन्न चित्त से अंजलिबद्ध तीन रतनों की शरण ग्रहण की और जीवनपर्यंत भगवान का श्रद्धालु उपासक बना।

## जीवक के छह गुण

भगवान ने एक प्रसंग में कहा कि जीवक में छह गुण हैं–

१. वह बुद्ध के प्रति अविकल श्रद्धा से युक्त है, २. वह धर्म के प्रति अविकल श्रद्धा से युक्त है, ३. वह संघ के प्रति अविकल श्रद्धा से युक्त है, ४. वह आर्यशील से युक्त है, ५. वह आर्य ज्ञान से युक्त है तथा ६. वह आर्य विमुक्ति से युक्त है।

इन गुणों के होने से वह तथागत के प्रति निष्ठावान, अमृतदर्शी है तथा अमृत का साक्षात्कार कर विहार करता है। आर्य वही है जिसने नामरूपातीत इंद्रियातीत अविनाशी अमृत का साक्षात्कार कर स्रोतापन्न हो गया है। ऐसा व्यक्ति जब चाहे तब उस ध्रुव अवस्था का साक्षात्कार कर सकता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



## अग्रपाल स्रोतापन्न

भगवान ने अनेकों में से अपने कुछ भिक्षु-भिक्षुणियों को किसी-किसी गुणविशेष में अग्र की उपाधि दी। इसी प्रकार अनेक स्रोतापन्न हुए गृहस्थों में से कुछ को किसी-किसी गुण में अग्र की उपाधि दी। जीवक को अनेक लोगों के बीच सदा प्रसन्न रहने वाले गुण में अग्र होने की उपाधि दी। जीवक एक कुशल वैद्य था। कुशल वैद्य को अनेक चिड़चिड़ाहट भरे व्याकुल रोगियों का उपचार सदा सौमन्यसता भरे प्रसन्नचित्त से करना चाहिए। जीवक की यह विशेपता थी कि वह केवल रोगियों से ही नहीं, किसी भी व्यक्ति से व्यवहार करते हुए अपने चित्त को प्रसन्न और विमल रखता था। स्रोतापन्न हो जाने पर उसका यह सहज स्वभाव और पुष्ट हो गया। इसके पीछे एक और भी कारण था –

## अग्र की उपाधि प्राप्त करने का आशीर्वचन

एक लाख कल्प पूर्व की घटना है। उस समय के सम्यक संबुद्ध भगवान पदुमुत्तर हंसवती नगर में विहार कर रहे थे। उन्हीं दिनों अपने पूर्वजन्म में जीवक वहीं रहता था। एक दिन भगवान पदुमुत्तर का धर्म-प्रवचन सुनने के लिए वहां उपस्थित था। प्रवचन के पश्चात उसने देखा कि भगवान ने एक गृहस्थ उपासक को लोगों के बीच सदा प्रसन्न रहने वाले व्यक्तियों में अग्र स्थान पर प्रतिस्थापित किया। यह देख कर उसे अत्यंत प्रसन्नता हुई और उसके मन में धर्मसंवेग के साथ यह कुशल धर्मकामना जागी कि कभी मैं भी लोगों के बीच सदा प्रसन्न रहने वाले व्यक्ति का अग्र स्थान प्राप्त कर सकूं। उसने अपनी यह धर्मकामना भगवान को बतायी। भगवान ने उसे योग्य पात्र देख कर उसका भविष्य देखा और उसे आशीर्वाद देते हुए यह भविष्यवाणी की कि एक लाख कल्पों के बाद जब शाक्य कुल में जन्मे सिद्धार्थ गौतम सम्यक सम्बुद्ध बनेंगे तब उनके उपासक होने पर तुम्हारी यह धर्मकामना पूरी होगी और तुम्हें यह अग्र स्थान प्राप्त होगा।

तत्पश्चात एक लाख कल्पों तक मनुष्य और देवलोकों में संसरण की अवधि सुखपूर्वक पूरी कर लेने के पश्चात जीवक के लिए भगवान सम्यक सम्बुद्ध पदुमुत्तर की आशीर्वादमयी भविष्यवाणी वर्तमान जन्म में सफलीभूत हुई। जीवक भगवान गौतम बुद्ध का उद्भव होने पर उनके द्वारा प्रतिस्थापित किए गए अग्रपालों में से एक हुआ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# विपश्यना साहित्य

## हिंदी

- निर्मल धारा धर्म की - (पांच दिवसीय प्रवचन) रु. ५५/-
- प्रवचन सारांश (शिविर-प्रवचन) रु. ४५/-
- जागे पावन प्रेरणा रु. ८०/-
- जागे अंतर्बोध रु. ८५/-
- धर्म: आदर्श जीवन का आधार रु. ४५/-
- तिपिटक में सम्यक संबुद्ध, भाग-२ रु. १३०/
- धारण करे तो धर्म रु. ८०/-
- क्या बुद्ध दुक्खवादी थे? रु. ४५/-
- मंगल जगे गृही जीवन में रु. ४०/-
- धम्मवाणी संग्रह (पालि गाथाएं एवं हिंदी अनु.) रु. ४०/-
- विपश्यना पगोडा स्मारिका रु. १००/-
- सुत्तसार भाग १ (दीघ एवं मज्झिम निकाय) रु. ९५/-
- सुत्तसार भाग २ (संयुत्तनिकाय) रु. ५०/-
- सुत्तसार भाग ३ (अंगुत्तर एवं खुद्दकनिकाय) रु. ४५/-
- धन्य बाबा! रु. ३५/-
- कल्याणमित्र सत्यनारायण गोयन्का (व्यक्तित्व और कृतित्व) रु. ५०/-
- पातंजल योगसूत्र रु. ६०/-
- आहुनेय्य, पाहुनेय्य, अंजलिकरणीय - डॉ. ओम प्रकाश जी रु. ३०/-
- राजधर्म [कुछ ऐतिहासिक प्रसंग] रु. ३५/-
- आत्म-कथन भाग-१ रु. ५०/-
- लोक गुरु बुद्ध रु. १०/-
- देश की बाह्य सुरक्षा रु. ०५/-
- गणराज्य की सुरक्षा कैसे हो! रु. ०६/-
- शाक्यों और कोलियों के गणतंत्र का विनाश क्यों हुआ? रु. १०/-
- अंगुत्तर निकाय, भाग-१ रु. १२५/-
- केंद्रीय कारागृह जयपुर, विपश्यना का प्रथम जेल शिविर रु. ५०/-
- विपश्यना : लोकमत भाग-१ रु. ५५/-
- विपश्यना : लोकमत भाग-२ रु. ७०/-
- अग्रपाल राजवैद्य जीवक रु. २०/-
- मंगल हुआ प्रभात (हिंदी दोहे) रु. ५५/-
- पथ-प्रदर्शिका रु. २/-
- विपश्यना क्यों? रु. १/-
- सम्राट अशोक के अभिलेख रु. ७०/-
- आचार्य श्री सत्यनारायणजी गोयन्का का संक्षिप्त जीवन-परिचय रु. ३०/-
- अहिंसा किसे कहें? रु. १५/-
- लकुण्डक भद्दिय रु. १०/-
- गौतम बुद्धः जीवन-परिचय और शिक्षा रु. २५/-
- भगवान बुद्ध की साम्प्रदायिकता-विहीन शिक्षा रु. १०/-
- बुद्ध-जीवन-चित्रावली रु. ३३०/-
- भगवान बुद्ध के अग्रश्रावक महामोग्गल्लान रु. ४५/-
- क्या बुद्ध नास्तिक थे? रु. ८५/-
- तिपिटक में सम्यक संबुद्ध, (६ भागों में)
भाग-१ रु. ६५/-, भाग-२ रु. ५०/-, भाग-३ रु. ५५/-, भाग-४ रु. ४५/-, भाग-५ रु. ४५/-, भाग-६ रु. ५५/-
- महामानव बुद्ध की महान विद्या विपश्यना का उद्‌गम और विकास (११६ चित्रों का संग्रह) सजिल्द रु. ६२५/-
- भगवान बुद्ध के महाश्रावक महाकस्सप (धुतांगधारियों में 'अग्र') रु. ४०/-
- महामानव बुद्ध की महान विद्या विपश्यना का उद्‌गम और विकास रु. १४५/-
- भगवान बुद्ध के अग्रउपासक अनाथपिण्डिक रु. ५०/-
- भगवान बुद्ध की अग्रश्राविका किसागोतमी रु. ३०/-
- चित्त गृहपति एवं हत्थक आळवक रु. ३०/-
- खुशियों की राह रु. १५०/-
- विसाखा मिगारमाता रु. ४५/-
- मगधराज सेनिय बिम्बिसार रु. ४५/-
- बुद्धसहस्सनामावली (पालि एवं हिंदी) रु. ३५/-
- आनन्द - भगवान बुद्ध के उपस्थाक रु. १३०/-
- जीने की कला रु. ७०/-
- परम तपस्वी श्री रामसिंह जी रु. ५५/-
- भगवान बुद्ध की अग्रउपासिकाएं खुज्जुत्तरा एवं सामावती तथा उत्तरानन्दमाता रु. २५/-
- विपश्यना पत्रिका संग्रह भाग - १ रु. ८०/-
- विपश्यना पत्रिका संग्रह भाग - २ रु. ७५/-
- आदर्श दंपति नकुलपिता एवं नकुलमाता रु. २५/-
- तिक-पट्ठान (संक्षिप्त रूपरेखा) रु. ३५/-
- भगवान बुद्ध के अग्रश्रावक सारिपुत्त रु. ६५/-
- बरमा में लिखी गयीं मेरी कविताएं रु. ३००/-
- बाहिय दारुचीरिय एवं भद्दा कुण्डलकेसा रु. ३०/-
- राहुल एवं रट्ठपाल रु. ४०/-
- पुण्ण मन्ताणिपुत्त एवं धम्मदिन्ना रु. ३०/-
- सोण कोळिविस एवं सोणा रु. ३०/-
- राहुलमाता (यशोधरा) रु. ३५/-
- भगवान बुद्ध के महाश्रावक आयुष्मान अनुरुद्ध रु. ३५/-
- १२ हिंदी पुस्तिकाओं का सेट रु. १४/-
- धम्म-वंदना (पालि गाथाएं, हिंदी अनुवाद) रु. ४५/-
- धम्मपद (संशोधित हिंदी अनुवाद सहित) रु. ४५/-
- महासतिपट्ठानसुत्त (समीक्षा एवं भाषानुवाद) रु. ५५/-
- महासतिपट्ठानसुत्त (भाषानुवाद) रु. ३५/-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

- बुद्धगुणगाथावली (पालि) रु. ३०/-
- बुद्धसहस्सनामावली (पालि) रु. १५/-
- प्रारंभिक पालि रु. ८५/-
- प्रारंभिक पालि की कुंजी रु. ५०/-
- जागो लोगां जगत रा (राजस्थानी दूहा) रु. ४५/-
- परिभाषा धरम री (राजस्थानी) रु. १०/-
- ५ राजस्थानी पुस्तिकाओं का सेट रु. ५/-
- विश्व विपश्यना स्तूप का संदेश (हिंदी, मराठी, अंग्रेजी) रु. १५/-

## मराठी

- जगण्याची कला रु. ७५/-
- जागे पावन प्रेरणा रु. ८०/-
- प्रवचन सारांश रु. ४५/-
- धर्म: आदर्श जीवनाचा आधार रु. ४५/-
- जागे अंतर्बोध रु. ६५/-
- निर्मळ धारा धर्माची रु. ४५/-
- महासतिपट्ठानसुत्त (भाषानुवाद) रु. ४५/-
- महासतिपट्ठानसुत्त (समीक्षा) रु. ४०/-
- मंगलमय गृहस्थ-जीवन रु. ४०/-
- भगवान बुद्धाची सांप्रदायिकता-विहीन शिकवणुक रु. १२/-
- बुद्धजीवन-चित्रावली रु. ३३०/-
- आनंदाच्या वाटेवर रु. १५०/-
- आत्म-कथन भाग-१ रु. ५०/-
- अग्रपाल राजवैद्य जीवक रु. २०/-
- महामानव बुद्धाची महान विद्या विपश्यना: उगम आणि विकास रु. १२५/-
- लोक गुरु बुद्ध रु. १०/-
- लकुण्डक भद्दिय रु. १२/-
- प्रमुख विपश्यनाचार्य श्री सत्यनारायणजी गोयंका यांचा संक्षिप्त जीवन-परिचय रु. १८/-
- भगवान बुद्धांचे अग्रउपासक अनाथपिण्डिक रु. ४५/-
- भगवान बुद्धांची अग्रउपासिका विसाखा मिगारमाता रु. ३५/-
- भगवान बुद्धांचे अग्रउपासक चित्त गृहपति व हत्थक आळवक रु. ३०/-
- भगवान बुद्धांची अग्रश्राविका किसागोतमी रु. २५/-
- धम्मपद (पालि-मराठी) रु. ४५/-

## गुजराती

- प्रवचन सारांश रु. ४५/-
- धर्म: आदर्श जीवननो आधार रु. ५०/-
- महासतिपट्ठानसुत्त रु. २०/-
- जागे अंतर्बोध रु. ७५/-
- धारण करें तो धर्म रु. ८०/-
- जागे पावन प्रेरणा रु. १००/-
- क्या बुद्ध दुःखवादी थे? रु. ३०/-
- विपश्यना शा माटे? (पुस्तिका) रु. ०२/-
- मंगल जगे गृही जीवन में रु. ३५/-
- निर्मल धारा धर्म की रु. ९०/-
- बुद्धजीवन-चित्रावली रु. ३३०/-
- लोक गुरु बुद्ध रु. ०६/-
- भगवान बुद्ध की साम्प्रदायिकता-विहीन शिक्षा रु. १०/-
- सम्राट अशोक के अभिलेख रु. ७५/-

## अन्य भाषाओं में

- द आर्ट ऑफ लिविंग (तमिळ) रु. ९०/-
- डिस्कोर्स समरीज (तमिळ) रु. ३०/-
- ग्रेसियस फ्लो ऑफ धम्म (तमिळ) रु. ५५/-
- मंगल जगे गृही जीवन में (तेलगु) रु. ३५/-
- प्रवचन सारांश (बंगाली) रु. ३५/-
- धर्म: आदर्श जीवन का आधार (बंगाली) रु. ३०/-
- महासतिपट्ठानसुत्त (बंगाली) रु. ९०/-
- प्रवचन सारांश (मलयालम) रु. ४५/-
- निर्मल धारा धर्म की (मलयालम) रु. ४५/-
- जीने का हुनर (उर्दू) रु. ७५/-
- धर्म: आदर्श जीवन का आधार (पंजाबी) रु. ५०/-
- निर्मळ धारा धर्माची (पंजाबी) रु. ७०/-

**पालि तिपिटक सेटः**

अङ्गुत्तरनिकाय (अजिल्द) (१२ ग्रंथ) रु. १५००/-

खुद्दकनिकाय - सेट १ (९ ग्रंथ) रु. ५४००/-

दीघनिकाय अभिनवटीका (रोमन) (भाग १ और २) रु. १०००/-

## English Publications

- Sayagyi U Ba Khin Journal Rs. 225/-
- Essence of Tipitaka by U Ko Lay Rs. 150/-
- The Art of Living by Bill Hart Rs. 90/-
- The Discourse Summaries Rs. 65/-
- Healing the Healer by Dr. Paul Fleischman Rs. 35/-
- Come People of the World Rs. 40/-
- Gotama the Buddha: His Life and His Teaching Rs. 45/-
- The Gracious Flow of Dharma Rs. 55/-
- Discourses on Satipaṭṭhāna Sutta Rs. 90/-
- The Wheel of Dhamma Rotates Rs. 850/-
- Vipassana : Its Relevance to the Present World Rs. 160/-
- Dharma: Its True Nature Rs. 115/-
- Vipassana : Addictions & Health (Seminar 1989) Rs. 115/-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

- The Importance of Vedanā and Sampajañña Rs. 135/-
- Pagoda Seminar, Oct. 1997 Rs. 80/
- Pagoda Souvenir, Oct. 1997 Rs. 50/-
- A Re-appraisal of Patanjali's Yoga- Sutra by S. N. Tandon Rs. 85/-
- The Manuals Of Dhamma by Ven. Ledi Sayadaw Rs. 280/-
- Was the Buddha a Pessimist? Rs. 65/-
- Psychological Effects of Vipassana on Tihar Jail Inmates Rs. 80/-
- Effect of Vipassana Meditation on Quality of Life (Tihar Jail) Rs. 100/-
- For the Benefit of Many Rs. 170/-
- Manual of Vipassana Meditation Rs. 85/-
- Realising Change Rs. 160/-
- The Clock of Vipassana Has Struck Rs. 130/-
- Meditation Now : Inner Peace through Inner Wisdom Rs. 85/-
- S. N. Goenka at the United Nations Rs. 25/-
- Defence Against External Invasion Rs. 10/-
- How to Defend the Republic? Rs. 6/-
- Why Was the Sakyan Republic Destroyed? Rs. 12/-
- Mahāsatipaṭṭhāna Sutta Rs. 70/-
- Pali Primer Rs. 95/-
- Key to Pali Primer Rs. 55/-
- Guidelines for the Practice of Vipassana Rs. 2/-
- Vipassana In Government Rs. 1/-
- The Caravan of Dhamma Rs. 90/-
- Peace Within Oneself Rs. 30/-
- The Global Pagoda Souvenir 29 Oct.2006 (English & Hindi) Rs. 60/-
- The Gem Set In Gold Rs. 75/-
- The Buddha's Non-Sectarian Teaching Rs. 15/-
- Acharya S. N. Goenka An Introduction Rs. 35/-
- Value Inculcation through Self-Observation Rs. 55/-
- Glimpses of the Buddha's Life Rs. 330/-
- Pilgrimage to the Sacred Land of Dhamma (Hard Bound) Rs. 750/-
- An Ancient Path Rs. 120/-
- Vipassana Meditation and the Scientific World View Rs. 30/-
- Path of Joy Rs. 200/-
- The Great Buddha's Noble Teachings The Origin & Spread of Vipassana (Small) Rs. 160/-
- Vipassana Meditation and Its Relevance to the World (Coffee Table Book) Rs. 800/-
- The Great Buddha's Noble Teachings The Origin & Spread of Vipassana (HB) Rs. 650/-
- Chronicles Of Dhamma Rs. 260/-
- Buddhaguṇagāthāvalī (in three scripts) Rs. 30/-
- Buddhasahassanāmāvalī (in seven scripts) Rs. 15/-
- English Pamphlets, Set of 9 Rs. 11/-
- Set of 10 Post Card Rs. 35/-
- Gotama the Buddha: His Life and His Teaching (French) Rs. 50/-
- Meditation Now: Inner Peace through Inner Wisdom (French) Rs. 80/-
- For the Benefit of Many (French) Rs. 195/-
- For the Benefit of Many (Spanish) Rs. 190/-
- The Art of Living (Spanish) Rs. 130/-
- Path of Joy (German, Italian, Spanish, French) Rs. 300/-

---

संपर्कः विपश्यना विशोधन विन्यास, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३, जि. नाशिक, महाराष्ट्र. फोन: ०२५५३-२४४०७६, २४४०८६, २४३७१२, २४३२३८. फैक्स: ०२५५३-२४४१७६. (दक्षिण भारतीय भाषाओं में अनुवादित विपश्यना साहित्य, स्थानीय केंद्रों पर उपलब्ध है ) Email: vri_admin@dhamma.net.in;

**विपश्यना विशोधन विन्यास के प्रकाशन अब ऑनलाइन भी खरीदे जा सकते हैं। कृपया देखें www.vridhamma.org**

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# विपश्यना साधना केंद्र

विश्वभर में विपश्यना के निम्नलिखित केंद्र हैं। इन केंद्रों पर प्राय: हर माह दस दिवसीय आवासीय शिविर आयोजित होते हैं। इच्छुक व्यक्ति किसी भी केंद्र से भावी शिविर-कार्यक्रमों की जानकारी प्राप्त करके, अपनी सुविधानुसार सम्मिलित हो सकते हैं: –

**प्रमुख केंद्र = धम्मगिरि, धम्मतपोवन : विपश्यना विश्व विद्यापीठ,** इगतपुरी-४२२४०३, नाशिक. फोन: [९१] (०२५५३) २४४०७६, २४४०८६, २४३७१२, २४३२३८; फैक्स: ०२५५३-२४४१७६. Website: www.vri.dhamma.org, Email: <info@giri.dhamma.org> (केवल कार्यालय के समय अर्थात सुबह १० बजे से सायं ५ बजे तक).

**धम्मनासिका: संपर्क: १) नासिक विपश्यना केंद्र,** म.न.पा. जलशुद्धिकरण केंद्र के सामने, शिवाजीनगर, सातपुर, (पोस्ट-YCMOU), नासिक-४२२२२२. संपर्क: फोन: (०२५३) ६५१६-२४२, ३२०३-६७७, मोबाइल: ९८२२५-१३२४४, Email: info@nasika.dhamma.org

**धम्मसरिता : धम्मसरिता विपश्यना केंद्र,** जीवन संध्या मंगल संस्थान, मातोश्री वृद्धाश्रम, सौरगांव, पोस्ट पडघा, ता. भिवंडी, जि. ठाणे-४२११०१ (खडावली मध्य रेल्वे स्टेशन के पास). online registration www.sarita.dhamma.org Email: registration Email: dhamma.sarita@gmail.com, info@sarita.dhamma.org, मोबा. ९१+९८२१९-५९३७६, ७७९८३-२४६५९, ७७९८३-२५०८६. (कार्यालय का समय सुबह ८ बजे से दोपहर १२ सायं ४ से ६ बजे तक). **संपर्क:** मोबा. +९१- ७७९८३-२४६५९, ७७९८३-२५०८६.

**धम्ममनमोद:** मनमाड विपश्यना केंद्र, अनकाई किला स्टेशन के पास, पो. अनकाई, ता. येवला, जि. नाशिक-४२२ ४०३ **संपर्क:** (०२५९१) २२५१४१-२३१४१४.

**धम्मवाहिनी:** मुंबई परिसर विपश्यना केंद्र, गांव रूंदे, टिटवाला (पूर्व) कल्याण, जि. ठाणे. **संपर्क: संपर्क:** मोबाईल: ९७७३०-६९९७८. केवल कार्यालय के दिन– १२ से सायं ६ तक. Email: registration vahini@dhamma.net.in Online registartion www.vahini.dhamma.net.in,

**धम्मसाकेत:** विपश्यना केंद्र, नालंदा स्कूल के पास, कानसई रोड, सुभाष टेकड़ी, उल्हासनगर-४२१००४, जि. ठाणे, महाराष्ट्र

**धम्मविपुल: विपश्यना साधना केंद्र,** सयाजी ऊ बा खिन मेमोरियल ट्रस्ट, प्लॉट नं. ९१ए; सेक्टर २६, पारसिक हिल, सीबीडी बेलापुर, नवी मुंबई ४०० ६१४. फोन: (०२२) २७५२-२२७७. Email: dhammavipula@gmail.com

**धम्मपत्तन:** एस्सेल वर्ल्ड के पास, गोराई खाड़ी, बोरीवली (पश्चिम) मुंबई – ४०० ०९१ **व्यवस्थापक,** फोन: (९१) (०२२) २८४५-२२३८, ३३७४-७५०१, मोबा. ९७७३०-६९९७५. (सुबह ११ से सायं ५ बजे तक ); टेलि-फैक्स: (०२२) ३३७४-७५३१ Email: info@pattana.dhamma.org; Website: www.pattana.dhamma.org

**धम्मसरोवर: खान्देश विपश्यना केंद्र,** गेट नं. १६६, डेडरगांव जलशुद्धिकरण केंद्र के पास, मु.पो. तिखी-४२४ ००२, जिला-धुळे. (०२५६२) २०३४८२, ६९९५७३. मोबा. ९२२५४-६१०२१. **संपर्क:** फोन: २२२८६१, मोबा. ९९२२६-०७७१८, ९८२२१-७१४२४, ९४२२७-७७९०२. Email: info@sarovara.dhamma.org

**धम्मानन्द: पुणे विपश्यना केंद्र,** मरकल गांव के पास, आलंदी से ८ कि.मी. मोबा. कार्यालय ९२७१३-३५६६८. व्यवस्थापक मोबा. ९४२०४-८२८०५. **संपर्क:** पुणे विपश्यना समिति, नेहरू स्टेडियम के सामने, आनंद मंगल कार्यालय के पास, दादावाडी, पुणे-४११००२. फोन: (०२०) २४४६८९०३, २४४३६२५०; टेलि/फैक्स: २४४६४२४३. Email: info@ananda.dhamma.org Website:www.pune.dhamma.org;

**धम्मपुण्ण: संपर्क:** पुणे विपश्यना समिति, दादावाडी, नेहरू स्टेडियम के सामने, आनंद मंगल कार्यालय के पास, पुणे-४११००२. फोन: (०२०) २४४३६२५०. २४४६८९०३. फैक्स: २४४६४२४३; Email: info@punna.dhamma.org

**धम्मालय: दक्खिन विपश्यना अनुसंधान केंद्र,** रामलिंग रोड, आलते पार्क, आलते, ता. हातकणंगले, जि. कोल्हापुर, पिन: ४१६१२३. फोन: ०२३०-२४८७१६७, २४८७३८३, Email: info@alaya.dhamma.org. **संपर्क:** कार्यालय: २१०१/१९ इ, जयहिंद अपार्टमेंट, लक्ष्मीनगर, कोल्हापुर-४१६००५. फोन:(२३१)·२५३०९९९, मोबा. ९७६७४-१३२३२.

**धम्मअनाकुल: विपश्यना साधना केंद्र,** खापरखेड़ फाटा, तेल्हारा-४४४१०८ जि. अकोला. **संपर्क:** १) विपश्यना चैरिटेबल ट्रस्ट, शेगांव, अपना बाजार, मेन रोड, शेगांव, जि. बुलडाना. फोन: ९५७९८-६७८९०, ९८८१२-०४१२५. २) श्री महेंद्र सिंह आनंद, मोबाइल: ९४२२१-८१९७०. Email: info@anakula.dhamma.org

**धम्मअजय: विपश्यना साधना केंद्र,** ग्राम - अजयपूर, पो. चिचपल्ली, मुल रोड, चंद्रपुर. Email: dhammaajaya@gmail.com संपर्क: मिलिंद घरडे, सुगतनगर, नगीनाबाग वार्ड, नं. २, चंद्रपूर-४४२४०१, मोबा. ८००७१-५१०५०, ९४२१७-२१००६.

**धम्ममल्ल: संपर्क:** श्री. शेन्के, सिद्धार्थ सोसायटी, यवतमाळ, ४४५००१, फोन: ९४२२८-६५६६१.

**धम्मभूसन:** विपश्यना साधना समिति, शांतिनगर, ओमकार कॉलोनी, कोटेचा हायस्कूल के पास, जि. जलगांव, भुसावल ४२५२०१, Email: info@bhusana.dhamma.org, **संपर्क:** मोबा. ९८२२९-१४०५६.

**धम्मअजन्ता : अजन्ता अन्तर्राष्ट्रीय विपश्यना समिति,** 'राजहंस' २ सुराणा नगर, जालना रोड, औरंगाबाद-४३१००३. (औरंगाबाद वैजापुर रोड, पर २० किलोमीटर दूरीपर, डायमंड ढाबेसे ५०० मी. अंतरपर केंद्र का बोर्ड है।) **संपर्क:** मोबाईल: ९४२२२-११३४४, ९९२१८-१७४३०.

**धम्मनाग: नागपुर विपश्यना केंद्र–** माहुरझरी गांव, नागपुर-कलमेश्वर रोड के पास, नागपुर; **संपर्क:** फोन: ०७१२-२४५८६८६, २४२०२६१, मोबा. ९४२३४-०५६००; फैक्स: २५३९७१६. Email: info@naga.dhamma.org

**धम्मसुगति: संपर्क:** १) श्री रामदास भास्कर, मोबा. ९४२२१-२९२२९. २) श्री कमलेश वाहन्दे, मोबा. ९३७३१०४३०५.

**धम्म अमरावती : विपश्यना केंद्र,** लुंबिनी मोगरा, पो. भानखेडा, ता. जि. अमरावती **संपर्क:** श्री किशोर देशमुख, द्वारा डॉ. सी. कमल रा. गवई, ४४ कमलपुष्प कांग्रेसनगर, अमरावती-४४४६०६ फोन: (०७२१) २६६२१७९, मोबा. ९४२०७२१८४४.

**धम्मगोंड: विपश्यना केन्द्र,** गोंदिया (आंभाटोला) ता. जि. गोंदिया - ४४१६०१, **संपर्क:** १) डा. बडोले, मोबा. ९६९१७७६६३६, ९८९३२३३२२४. २ श्री वासदे, ८४१२०४४०११, ९४२३३६५३१५.

**धम्मवसुधा: विपश्यना केंद्र,** खिवरा पोस्ट झडशी, ता. सेलु, जि. वर्धा **संपर्क:** १) श्री एवं सी बांते, मोबा. ९३२६७३२५५०, ९३२६७३२५४७ २) श्री काटवे, मोबा. ९७३००६९७२६. Email: dhammavasudha@yahoo.com.in

**धम्म छत्तपति:** फलटन सातारा, महाराष्ट्र

**धम्म आवास: लातुर विपश्यना समीती,** आर. टी. ओ आफीस के पास, वसंत विहार कालोनी, बाभळगाव रोड, लातूर-४१३५३१ **संपर्क:** मोबा. ९४२१०-८७०१२, ९९७०२-७७७०१, ९४२३३४७०२३, ९४२२४-२५९११, ९२७०१-१६२१६. Email: lvslatur@gmail com

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

**धम्म निरंजनः विपश्यना साधना केंद्र,** नेरली कुशला धाम नेरली. (नांदेड से ५ कि मी. की दुरी पर) **संपर्कः** १) श्री एस. एम. जोंधले, मोबाइलः ९४२२१८९३१८. २) डॉ. कुलकर्णी. फोनः (०२४६२) २५२६५९. मोबाइलः ९४२२१७३२०२.

**धम्मथलीः विपश्यना केंद्र,** पो.बॉ. २०८, जयपुर-३०२००१, राजस्थान, फोनः [९१] ०१४१-२६८०२२०, मोबा. ०-९६१०४-०१४०१, ०९९८२०४९७३२, फैक्सः २५७६२८३. Email: info@thali.dhamma.org

**धम्ममरुधराः विपश्यना साधना केंद्र,** कहरिया रिसोर्ट के पीछे, पाल-चौपासनी लींक रोड, चोखा, जोधपुर-३४२००९. मोबा. +९१-९३१४७२७२१५. +९१-९८२८१३११२०. फैक्सः +९१-२९१-२७४६४३५. Email: info@marudhara.dhamma.org **संपर्कः** श्री नेमीचंद भंडारी, ४१, अशोकनगर, पाल लींक रोड, जोधपुर-३४२००३. मोबा.: +९१-९८२९०२७६२१.

**धम्मपुब्बजः** चूरू (राजस्थान) **पुब्बज भुमी विपश्यना ट्रस्ट,** वलेरी रोड, (चूरू से ६ कि.मी.) चूरू (राजस्थान): **संपर्कः** १) श्री श्रवण कुमार फुलवारी, सी-८६, सामुदायीक भवन के पास अग्रसेन नगर, चूरू, मोबा. ०९४१४६-७६०६१. Email: gk.churu@gmail.com २) श्री सुरेश खन्ना, ६५ इंदिरा कालोनी, वनी पार्क, जयपुर, मोबा. ९४१३१-५७-५६. Email: sureshkhanna56@yahoo.com

**धम्मअजरामर : विपश्यना केंद्र,** वीर तेजाजी नगर, दौराई, अजमेर-३०५००३; फोनः (०१४५) २४४३६०४. **संपर्कः** श्री कैलाश बैरवाल, मोबा. ९४१३२-२८३४०, ९४६१५६१३४४, ९००११९६५५६. Email: kailashbairwal@yahoo.com

**धम्मपुष्करः विपश्यना केन्द्र,** ग्राम रेवत (केडेल), पुष्कर पर्वतसर रोड, पुष्कर, जि अजमेर. मोबा. +९१-९४१३३-०७५७०. फोनः +९१-१४५-२७८०५७०. **संपर्कः** १) श्री रवि तोपर्णावाल, मोबा. ०९८२९०-७१७७८, Email: info@toshcon.com २) श्री अनिल धारीवाल, मोबा. ०९८२९०-२८२७५. फैक्सः ०१४५-२७८७१३१.

**धम्मसोतः विपश्यना साधना संस्थान,** राहका गांव, (निम्मोद पोलीस पोस्ट के पास) बल्लभगढ़-सोहना रोड, (सोहना से १२ किमी.), जिला- गुडगांव, सोहना, हरियाणा. मोबा. ९८१२६५५५९९, ९८१२६४१४००. (बल्लभगढ़ और सोहना से बस उपलब्ध है।) **संपर्कः** विपश्यना साधना संस्थान, रुम न. १०१५, १० वां तल, हेमकुंड/मोदी टावर्स, ९८ नेहरू प्लेस, नई दिल्ली-११००१९. फोनः (०११) ४६५८-५४५५, २६४५-२७७२. फैक्सः २६४७०६५८. Email: reg.dhammasota@gmail.com

**धम्मपट्ठानः विपश्यना साधना केंद्र,** कम्मासपुर, जि. सोनीपत, हरियाणा, पिन-१३१००१. Email: reg.dhammapatthana@gmail.com मोबा. ०९९९१८७४५२४, **संपर्कः** ऊपर धम्मसोत के संपर्क पर.

**धम्मकारुणिकः विपश्यना साधना संस्थान,** गव्हरमेंट स्कूल के पास, गांव नेवल, डाक सैनिक स्कूल कुंजपुरा, करनाल-१३२००१; **संपर्कः** श्री वर्मा, ५, शक्ति कालोनी, एस.बी.आई. के पास, करनाल-१३२००१. टेली-फैक्सः ०१८४-२२५७५४३, २२५७५४४; मोबा. ९९९२०-००६०१. Email: info@karunika.dhamma.org;

**धम्म हितकारीः विपश्यना साधना समीती,** (ट्रस्ट) जनसेवा संस्थान, भिवानी रोड, रोहतक-१२४००१, **संपर्कः** १) श्री. चैतन्य, मोबा. ९४१६३०३६३९, २) श्री मलीक, मोबा. ९२५५२५५६४९.

**धम्मसिखर : हिमाचल विपश्यना केंद्र,** धरमकोट मैक्लोडगंज, धर्मशाला, जिला- कांगरा, पिन-१७६२१९ (हि. प्र.). फोनः ०९२१८४१४०५१, ०९२१८४१४०५०, (पंजीकरण के लिए फोन सायं ४ से ५) Email: info@sikhara.dhamma.org

**धम्मलद्ध : विपश्यना साधना लद्दाख, संपर्कः** डॉ. ताशी थिनलस, लद्दाख विपश्यना ट्रस्ट, पोतला मेडीकॉस, भट काम्प्लेक्स, मेन मार्केट लेह-१९४१०१, लद्दाख ((जम्मू-कश्मीर)) Email: ladakhvipassana@yahoo.co.in; info@ladakh.in.dhamma.org, मोबाईलः [९१] ९९०६९८६६५५.

**धम्मसलिलः देहरादून विपश्यना केंद्र,** जनतनवाला गांव, देहरादून कॅन्ट तथा संतला देवी मंदिर के पास, देहरादून-२४८००१. फोनः ०१३५-२१०४५५५, Email: reg.dhammasalila@gmail.com; **संपर्कः** १) श्री भंडारी, १६ टैगोर विला, चक्राता रोड, देहरादून-२४८००१. फोनः (०१३५) २७१५१८९, फैक्सः २७१५५८०. २) श्री एस पी शर्मा, फोनः २१०४५५५, ०९३१८९२५००५.

**धम्मसुवत्थीः जेतवन विपश्यना साधना केंद्रः** कटरा बाईपास रोड, बुद्धा इंटर कालेज के सामने, श्रावस्ती, पिन-२७१८४५; फोनः (०५२५२) २६५४३९, ०९३३५८३३३७५ Email: info@suvatthi.dhamma.org **संपर्कः** श्री मुरली मनोहर, मोबाईलः ०९४१५०-३६८९६.

**धम्मलक्खणः लखनऊ विपश्यना केंद्र,** अस्ती रोड, रेल्वे क्रासिंग, बक्शी का तालाब, लखनऊ-२२७२०२. फोनः (०५२२) २९६८५२५. मोबा. ०९७९४५४५३३४, ९४१५०२८०८४. Email: info@lakkhana.dhamma.org **संपर्कः** १) श्री जैन, ए-१०१, हेम्प्टन कोर्ट्स अपार्टमेंट्स, पिकॅडिली होटल के पीछे, आलमबाग, लखनऊ-२२६ ००५. (उ.प्र.) फोनः नि. (०५२२)-२४२-४४०८, मोबा. ०९३३५९-०६३४१, ०९४१५०-३६८९६, ०९४१५७-५१०५३. २) मृदुला मुकेश, मोबा. ९४१५०-१०८७९, ९४१५३०७६००.

**धम्मधजः पंजाब विपश्यना केंद्र,** आनंदगढ़, पो. मेहलांवली-१४६११०, जिला- होशियारपुर. फोनः ०१८८२-२७२३३३, मोबाइलः ९४६५१-४३४८८. Email: info@dhaja.dhamma.org

**धम्म तिहारः** नई दिल्ली जेल न. ४ तिहार, केन्द्रीय कारागृह, नई दिल्ली

**धम्म रक्खकः** नई दिल्ली नजफगढ़, पुलिस ट्रेनिंग कालेज

**धम्मचक्कः विपश्यना साधना केंद्र,** खरगीपुर गांव, पो. पियरी, चौबेपुर, (सारनाथ), वाराणसी. मोबाः ०९३०७०९३४८५; ०९९३६२३४८२३, Email: info@cakka.dhamma.org (सारनाथ म्युजियम से ऑटोरिक्शा है।) **संपर्कः** १) श्री गुप्ता, फोनः ०५४२-३२४६०८९. मोबा. ९३३६९-१४८४३, (प्रातः १० से सायं ६.)

**धम्मकल्याणः कानपुर, अंतर्राष्ट्रीय विपश्यना साधना केंद्र,** ढोंड़ी घाट, रूमा, पो. सलेमपुर, कानपुर नगर- २०९४०२, (सेन्ट्रल रेल्वे स्टेशन से २३ कि० मी०) फोनः ०७३८८-५४३७९३, ०७३८८-५४३७९५, मोबा. ०८९९५४८०१४९. Email: dhamma.kalyana@gmail.com, **संपर्कः** १) श्री अशोक साहू, फोनः ०५१२-२४१०३२५, २४१०८८६, २) डॉ. ओ. पी गुप्ता, मोबा. ०९४५०१-३२४३६.

**धम्मसिन्धुः कच्छ विपश्यना केन्द्र,** ग्राम- बाड़ा, ता. मांडवी, जिला- कच्छ ३७०४७५. फोनः (०२८३४) २७३३०३, फैक्सः २२४४८८, २८८९११; Email: info@sindhu.dhamma.org **संपर्कः** श्री शाह, प्रो. के. टी. शाह रोड, मांडवी-कच्छ-३७०४६५. फोनः (०२८३४) २२३४०६, मोबा. ९९०९१-७०२००.

**धम्मकोट : सौराष्ट्र विपश्यना केंद्र,** कोठारिया रोड, राजकोट. फोनः (०२८१) २९२४९२४, २९२४९४२.: मोबाईलः ९३२७९-२३५४० Email: info@kota.dhamma.org (राजकोट से १५ कि.मी.) **संपर्कः** १) सौराष्ट्र विपश्यना केंद्र, C/o भाभा डायनिंग हॉल, पंचनाथ रोड, राजकोट-३६०००१. फोनः ०२८१- २२२०८६१६, मोबाईलः ९४२७२-२१५९१, फैक्सः २२२१३८४. २) श्री प्रेरणा फोनः २५८७५०० मोबाईलः ०४२८२०३२९१

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

**धम्मदिवाकरः उत्तर गुजरात विपश्यना केंद्र,** मीठा गाव, ता. और जिला- मेहसाणा, गुजरात; फोनः (०२७६२) २७२८००. Email: info@divakara.dhamma.org संपर्कः फोनः (०२७६२) २५४६३४, २५३३१५. मोबा. ०९४२९२३३०००,

**धम्मसुरिन्दः** सुरेंद्रनगर, गुजरात **संपर्कः**१) महासतीजी, फोनः (०२७५२) २४२०३०. २) डॉ. वघिशी, फोनः २३२५६४.

**धम्मभवनः संपर्कः** १) 'धम्मभवन', ५ कालिंदी पार्क, अकोटा अतिथिगृह के पीछे, अकोटा, बड़ौदा-३९००२०; फोनः (०२६५) २३४११८१. २) विट्ठलभाई पटेल, फोनः (०२६९२) मोबा. ९८२५०-२८०५७. Email: vvsou@hotmail.com

**धम्म अम्बिका : विपश्यना ध्यान केंद्र,** नेशनल हायवे नं. ८. (मुंबई से अहमदाबाद) पश्चिम से २ कि० मी० दूरी पर वांगियाच टोलनाका, ग्राम वागलवाड ता. गनदेवी जि. नवसारी, फोनः ०२६३४ २९११००, पंजीकरणः दोपहर ११ से सायं ५ (०२६१) ३२६०९६१, ०९८२५९५५८१२. www.ambika.dhamma.org Online registration: dhammaambikasurat@gmail.com **संपर्कः** १) वसंतभाई लाड, मोबा. ०९४२८१६०७१४, २) श्री रत्नशीभाई के. पटेल, मोबा. ०९८२५०४४५३६.

**धम्मपीठ : गुर्जर विपश्यना केंद्र,** ग्राम रनोडा, ता. धोलका, जिला- अहमदाबाद-३८७८१०. मोबा. ८९८००-०१११०, ८९८००-०१११२, ९४२६४-१९३९७. फोनः (०२७१४) २९४६९०. Email: info@pitha.dhamma.org **संपर्कः** १) श्रीमती शशी तोडी, मोबा. ९८२४०-६५६६८.

**धम्मखेत: विपश्यना अन्तर्राष्ट्रीय साधना केंद्र,** (१२.६ किमी.) माइल स्टोन नागार्जुन सागर रोड, कुसुम नगर, वनस्थलीपुरम हैदराबाद-५०००७०. (आंध्र प्रदेश) फोनः (०४०) २४२४०२९०, ३२४६०७६२, ०९४९१५९४२४७. फैक्सः २४२४१७४६. Email: info@khetta.dhamma.org

**धम्मसेतु : विपश्यना साधना केंद्र,** ५३३. पझान- थंडलम रोड, थीरुनीरमलाई रोड, द्वारा थीरुमुदीवक्कम, चेन्नई-६०००४४. मोबाइलः ९४४४२-८०९५२, ९४४४२-९०९५३, ९४४४०-२१६२२. Email.: setu.dhamma@gmail.com **संपर्कः** श्री गोयन्का, नं. २, सौधम्मल रोड, अलवरपेठ, चेन्नई-६०००१८. फोनः (०४४) ४३४०-७०००, ४३४०-७००१, फैक्सः ९१-४४-४२०१-११७७. मोबाइलः ०९८४०७-५५५५५. Email: skgoenka@kgiclothing.in; skgoenka@gogogarments.in, **शिविर संबंधीत जानकारी तथा पंजीकरण के लिए संपर्कः** ९४४४४-६२५८३, ९४४२२-८७५९२, ९०४२६-३२८८९, ८०१५७-५६३३९, ९९४०४-६७४५३. (केवल कार्यालय के समय अर्थात सुबह १० बजे से १ तथा सायं २ से ५ बजे तक).

**धम्मपफुल्लः बेंगलोर विपश्यना केंद्र,** अलूर-५६२१२३. (गाँव अलूर, अलूर पंचायत कार्यालय के पास) तुमकूर हाईवे के सामने दासनपुरा बेंगलोर उत्तर तालुका, (कर्नाटक). फोनः (०८०) २२२२४३३०, २३७१२३७७, मोबा. ७८२९९१२७३३, ८८६१६४४२८४, ९९७२५८८३७७, Email: info@paphulla.dhamma.org

**धम्मनागज्जुन : विपश्यना साधना केंद्र,** हिल कॉलोनी, नागार्जुन सागर, जि. नालगोंडा, आंध्र प्रदेश, (हैदराबाद से १४०.४ किमी, बुद्धपार्क के पास, हिल कॉलोनी से हैदराबाद की तरफ ३ किमी. दूरी पर) पिन-५०८२०२. फोनः (८६८०) २७७९९९ मोबाः ०९९६३७७५६४५, ९४४०१- ३९३२९. Email: info@nagajjuna.dhamma.org

**धम्मनिज्झान : विपश्यना साधना केंद्र,** इंदूर, पो. पोचाराम-५०३१८६, येदपल्ली मंडल, जि. निजामाबाद, फोनः (०८४६७) ३१६६६३, ९९०८५९६३३६. Email: info@nijjhana.dhamma.org

**धम्मविजय : विपश्यना साधना केंद्र,** विजयराय, पोस्ट- पेदावेगी मंडलम्, पिन-५३४४७५, जि. पश्चिम गोदावरी, (आंध्र प्रदेश). फोनः (०८८१२) २२५५२२; मोबा. ९४४१४-४९०४४

**धम्मारामः विपश्यना अंतर्राष्ट्रीय साधना केंद्र,** कुमुदावल्ली गांव, भीमावरम-भानुकु रोड, (भीमावरम के पास), मंडल -पाल कोडेरु, जि. पश्चिम गोदावरी, पिन-५३४२१०. फोनः ०८८१६- २३६५६६. Email: info@rama.dhamma.org

**धम्म कोण्डञ्ञ : विपश्यना साधना केंद्र,** कोंडापुर (व्हाया) संगारेड्डी, जि. मेडक - ५०२३०६. **संपर्कः** मोबा. ९३९२०-९३७९९, ९३९८३-१६१५५.

**धम्मकेतनः विपश्यना साधना केंद्र,** पो. मम्परा (व्हाया) कोडुकुलान्जी, चेन्गन्नूर, जि. अलपुझा. केरल-६८९५०८. फोनः (०४७९) २३५-१६१६. Email: info@ketana.dhamma.org **संपर्कः** १) (कार्यालय) **केरल विपश्यना समिति,** मायथ्री, नेरेयदरा लाइन, परनडीर रोड, एलमकरा पो. ऑ. कोची-६८२ ०२६. केरल फोनः (०४८४) २५३९८९१ २) डा. गोपीनाथ नायर, मोबा. ९४४७२८७४१५, ३) श्री रघुनाथ कुरुप, मोबा. ९४९५१-१८८७१.

**धम्म मधुरः विपश्यना साधना केंद्र,** गाव चेतीपत्ती, पो. कीलेकोथाइ, गांधीग्राम ता. अथुर जि. दिंडीगुल-६२४३०२, Email.: dhammamadhura@gmail.com **संपर्कः** १. श्रीमती रेणुक मेहता, मोबा. ९४४३७-२८११६, ९४४२६-०३४९०, २. श्री मदन बन्सल, मोबा. ९८४३४५११५३.

**धम्मकानन : धम्मकानन विपश्यना केंद्र,** वैनगंगा तट, रेंगाटोला, पो. गर्रा, बालाघाट. फोनः (०७६३२) २९२४६५; **संपर्कः** १) श्री हरिदास मेश्राम, १२६, रतन कुटी, गंगानगर रोड, बुढ़ी, बालाघाट-४८१००१, (म. प्र.) फोनः (०७६३२) २३९१६५, मोबाइलः ०९४२५१४००१५, Email: dineshbgt@hotmail.com २) श्री अशोक खोब्रागडे, लुम्बिनी नगर, बालाघाट, मोबा. ९४२४३-३६२४१.

**धम्मकेतुः विपश्यना केंद्र,** थनौद, व्हाया-अंजोरा, जिला-दुर्ग, छत्तीसगढ़-४९१००१; Email: sadhana_kendra@yahoo.in फोनः (०७८८) ३२०५५१३, मोबा. ९५८९८४२७३७, **संपर्कः** १) श्री खैरे, फोनः (०७८८) २२४२७५७, मोबा. ०९४२५२-३४७५७. २) श्री जोशी, मोबा. ०९०९८९-२०२४६.

**धम्मबल : विपश्यना साधना केंद्र,** भेडाघाट थाने से एक किलोमीटर, बापट मार्ग, भेडाघाट, जबलपुर. मोबा. ९३००५०६२५३. **संपर्कः** विपश्यना ट्रस्ट, जबलपुर, द्वारा - मधु मेडिकल स्टोर्स, मेडिसिन काम्प्लेक्स, शास्त्रीब्रिज के पास, मॉडेल रोड, बैंक ऑफ बड़ौदा के बाजू में, जबलपुर-०२ फोनः ०७६१-४००६२५२, मोबा. ९९८१५-९८३५२, ९४२४३-५५२१४.

**धम्मलिच्छवी : वैशाली विपश्यना केंद्र,** नदौरा ग्राम, नदौरा पाकी, मुजफ्फरपुर-८४३११३. फोनः ०९९३११६१२९०. **संपर्कः** श्री गोयन्का, जैनीथ आटो सर्विस, अघोरिया बाजार, पो. रामना, मुजफ्फरपुर, पिन-८४२००२. फोनः ०६२१- २२४०-२१५, २२४७७६०. Email: info@licchavi.dhamma.org

**धम्मबोधिः बोधगया अंतर्राष्ट्रीय विपश्यना साधना केंद्र,** मगध विश्वविद्यालय के समीप, पो. मगध विश्वविद्यालय, गया-डोभी रोड, बोधगया-८२४२३४, मोबा. ९४७१६-०३५३१, Email: info@bodhi.dhamma.org **संपर्कः** फोनः (०६३१) २२००४३७, ९९५५९-११५५६.

**धम्मपुब्बोतर : मिजोरम विपश्यना साधना केंद्र,** कमलानगर-२, सीएडीसी, चांगते-सी, जि. लॉगतलाई, मिजोरम-७९६७७२. Email: mvmc.knagar@gmail.com, **संपर्कः** १) दिगंबर चकमा, फोनः ०३७२-२५६३६८३. मोबा. ०९४३६७-६३७०८,

**धम्मपुरीः त्रिपुरा विपश्यना मेडिटेशन सेंटर,** पो. मधमरा, जि. उत्तर त्रिपुरा, पिनः ७९९२६५. मोबा. ०९८६२६-४६७६४, Email:

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Info@Puri.dhamma.org **संपर्कः** श्री देवान मोहन, फोन: ०३८१-२३००४४१, मोबा. ०९८६२१-५४८८२, ०९४०२५-२७१९१.

**धम्मगंगाः विपश्यना केंद्र,** सांदपुर, हरिश्चन्द्र दत्ता रोड, पनिहटी, वारो मन्दिर घाट, कोल्काता-७००११४. फोन: (०३३) २५५३२८५५. Email: info@ganga.dhamma.org **संपर्कः** कार्यालय: श्री कार्जाड़िया, २२, बोनफील्ड लेन, दूसरा तल्ला, कोल्काता-७००००१. फोन: (०३३) २२४२३२२५/४५६१ (२) श्री तोदी, १२३A, मोतीलाल नेहरू रोड, कोल्काता-२९ फोन नि. २४८५४१७९. मोबा. ९८३१४-४७७०१.

**धम्मवंगः** कोलकाता, पश्चिम बंगाल **संपर्कः** धम्मगंगा केंद्र.

**धम्मपाल : धम्मपाल विपश्यना केंद्र,** केरवा डैम के पीछे, ग्राम दौलतपुरा, भोपाल-४६२ ०४४, संपर्क: मोबा. ८४३५६-८६४१८. **संपर्कः** प्रकाश गेडाम, मोबा. ९४२५०-९७३५८, फोन: (०७५५) २४६८०५३, २४६२३५१, फैक्स: २४६-८१९७. Email: dhammapala.bhopal@gmail.com ऑनलाइन आवेदन; http://www.dhamma.org/en/schedules/schpala.shtml

**धम्ममालवा : इंदौर (म.प्र.)** विपश्यना केंद्र, ग्राम - जंबूडी हप्सी, गोमटगिरी के आगे, पितृ पर्वत के सामने, हातोद रोड, इंदौर-४५२००३. **संपर्कः** १) इंदौर विपश्यना इंटरनेशनल फाउंडेशन, ट्रस्ट, "लाभगंगा" ५८२, एम. जी. रोड इंदौर (म.प्र.) फोन: (०७३१) ४२७३३१३. Email: info@malava.dhamma.org; dhammamalava@gmail.com २) श्री शंभुदयाल शर्मा, मोबा. ९८९३१-२९८८८.

**धम्मरत :** (रतलाम से १५ कि.मी.) साई मंदीर के पीछे, ग्राम धमनोद ता. साईलन जि. रतलाम-४५७००१, फैक्स: ०७४१२ ४०३८८२, मोबा. ०९८२७५-३५२५७. Email: dhamm.rata@gmail.com **संपर्कः** रतलाम विपश्यना समिति, द्वारा डा वाधवानी क्लीनीक, ११७, स्टेशन रोड, रतलाम-४५७००१ मोबा. ०९९८१०-८४८२२, ९४२५३-६४९५६.

**धम्मउपवनः** वाराचकिया, विहार **संपर्कः** फोन: निवास (०६२१) २४४ ९७५; ५५२१ ०७७०

**धम्मउत्कलः** विपश्यना साधना केंद्र, ग्राम चानवेरा पो. अमसेना, (व्हाया) खरियार रोड जिला: नुआपाडा, उड़ीसा-७६६१०६, मोबा. ०९४०६२३७८९६. **संपर्कः** १) श्री. हरिलाल साहू, मोबा. ०७८७५२-६३०३५, Email: harilal.sahu@gmail.com २) श्री. पुरुषोत्तम, मोबा. ०९९३८०-४७७७७,

**धम्मसिक्किमः विपश्यना साधना केंद्र,** पो. ऑ. आहो सेन्ती, ग्राम, सेन्ती ईस्ट सिक्किम- ७३७१३५. Email: info@sikkim.org; **संपर्कः** शीलादेवी चौरसिया, मोबा. ०९८३०७-०६४८१, ०९७४८४-६१७८७, ०९४३४३-३९३०३, ०९४३४८-६२२२६. Email: basantigorsia@hotmail.com

**धर्मशृंगः नेपाल विपश्यना केंद्र,** मुहान पोखरी, बूढ़ानीलकंठ, पो. बा. १२८९६, काठमांडू, फोन: ९७७ (०१) ४३७१६५५, ४३७१००७, ४२५०५८१, ४२२५४९०; निवास: ४२२४७२०, ४२२६३१४. Email: info@sringa.dhamma.org; **संपर्कः** फोन: २५०५८१, २२५४९०, नि.२२१२९०. फैक्स: २२४७२०, २२६३१४.

**धम्मजननीः लुंबिनी विपश्यना केंद्र,** लुंबिनी (पीस फ्लेम के पास), रुपनदेही, लुंबिनी अंचल, नेपाल. Email: info@janani.dhamma.org फोन: ९७७ (७१) ५८०२८२. **संपर्कः** नेपाल. फोन: ९७७ (७१) ५४१५४९.

**धम्मविराट : पूर्वांचल विपश्यना केंद्र,** फुलवरी टोल, बस पार्क के दक्षिण की ओर इथारी- ७ संसरी, नेपाल; फोन: [९७७] (२५) ५८५५२१; Email: info@birata.dhamma.org; **संपर्कः** १) श्री मुंदडा, फोन: [९७७] (२१) ५२५४८६, ५२७६७१. फैक्स: ५२६४६६; २) श्री गोयल, फोन: दूकान [९७७](२५)५२३५२८, नि. ५२६८२९.

**धम्मतराई : बीरगंज विपश्यना केंद्र,** परवानीपुर, पारसा, नेपाल. Email: info@tarai.dhamma.org **संपर्कः** १) कार्यालय: संदीप बिल्डिंग, आदर्श नगर, पो. बा. नं. ३२. फोन: ०५१-५२१८८४. फैक्स: ०५१-५८०४६५. मोबा. ९८०४२-४५७६

**धम्मचितवन :** चितवन विपश्यना केंद्र, मंगलपुर व्ही.डी.सी. वार्ड नं ८, विजयनगर बाजार के समीप, चितवन, नेपाल Email: info@citavana.dhamma.org **संपर्कः** १) श्री महाराजन, फोन: ९७७(५६) ५२०२९४, ५२८२९४

**धम्मकीत्ति :** कीर्तिपुर विपश्यना केंद्र, देवधोका, कीर्तिपुर, नेपाल. **संपर्कः** श्री महर्जन, समाल तोले, वार्ड नं. ६, कीर्तिपुर.

**धम्मपोखरा : पोखर विपश्यना केंद्र,** पचभैया लेखनाथ नगरपालिका, पोखरा, कसकी, नेपाल. **संपर्कः** श्री नारा गुरुंग फोन: [९७७] (०६१) ६९१९७२, मोबा. ९८४६२-३२३८३, ९८४१२-५५६८८. Email: info@pokhara.dhamma.org

**Cambodia**

**Dhamma Laṭṭhikā: Battambang Vipassana Centre,** Trungmorn Mountain, National Route 10, District Phnom Sampeau, Battambang, Cambodia **Contact:** Phnom-Penh office: Mrs. Nary POC, Street 350, #35, Beng Keng Kang III, Khan Chamkar Morn, Phnom-Penh, Cambodia. P.O. Box 1014 Phnom-Penh, Cambodia Tel. [855] (012) 689 732; poc_nary@hotmail.com; **Local contact:** Off: Tel: [855] (536) 488 588, 2. Mr. Sochet Kuoch, Tel: [855] (092) 931 647, [855] (012) 995 269 Email: mientan2000@yahoo.co.uk and ms_apsara@yahoo.com

**Hong Kong**

**Dhamma Muttā:** G.P.O. Box 5185, Hong Kong Tel: 852-2671 7031; Fax: 852-8147 3312, Email: info@hk.dhamma.org

**Indonesia**

**Dhamma Jāvā:** Jl. H. Achmad No.99; Kampung Bojong, Gunung Geulis, Kecamatan Sukaraja, Cisarua-Bogor, Indonesia. Tel: [62] (0251) 827-1008; Fax: [62] (021) 581-6663; Website: www.java.dhamma.org, Course Registration Office Address: IVMF (Indonesia Vipassana Meditation Foundation), Jl. Tanjung Duren Barat I, No. 27 A, Lt. 4, Jakarta Barat, Indonesia Tel : [62] (021) 7066 3290 (7am to 10pm); Fax: [62] (021) 4585 7618; Email: info@java.dhamma.org

**Iran**

**Dhamma Īran:** Teheran Dhamma House Tehran Mehrshahr, Eram Bolvar, 219 Road, No. 158 Tel: 98-261-34026 97; website: www.iran.dhamma.org; Email: info@iran.dhamma.org

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

**Israel**

**Dhamma Pamoda:** Kibbutz Deganya-B, Jordan Valley, Israel **City contact:** Israel Vipassana Trust, P.O. Box 75, Ramat-Gan 52100, Israel, Website: www.il.dhamma.org/os/Vipassana-centre-eng.asp; Email: info@il.dhamma.org

**Korea**

**Dhamma Korea:** Tel: +82-010-8912-3566, +82-010-3044-8396 Website: www.kr.dhamma.org; Email: dhammakor@gmail.com

**Japan**

**Dhamma Bhānu:** 2-1 Iwakamioku, Hatta, Kyotamba-cho, Funai-gun, Kyoto 622-0324 Tel/Fax: [81] (0771) 86 0765, Website: www.bhanu.dhamma.org; Email: info@bhanu.dhamma.org

**Dhammādicca:** 785-3 Kaminogo, Mutsuzawa-machi, Chosei-gun, Chiba, 299-4413 Tel/Fax: [81](475)403611 Website: www.adicca.dhamma.org; Email: info@adicca.dhamma.org

**Malaysia**

**Dhamma Malaya: Malaysia Vipassana Centre, Centre Address:** Gambang Plantation, opp. Univ. M.P. Lebuhraya MEC, Gambang, Pahang, Malaysia Office Address: No., 30B, Jalan SM12, Taman Sri Manja, 46000 Petaling Jaya, Malaysia. Tel: [60] (16) 341 4776 (English Enquiry) Tel: [60] (12) 339 0089 (Mandarin Enquiry) Fax: [60] (3) 7785 1218; Website: www.malaya.dhamma.org; Email: info@malaya.dhamma.org

**Mongolia**

**Dhamma Mahāna: Vipassana center trust of Mongolia.** Eronkhy said Amaryn Gudamj, Soyolyn Tov Orgoo, 9th floor, Suite 909, Mongolia Tel: [976] 9191 5892, 9909 9374; **Contact:** Central Post Office, P. O. Box 2146 Ulaanbaatar 211213, Mongolia, Email: info@mahana.dhamma.org

**Myanmar**

**Dhamma Joti: Vipassana Centre,** Wingaba Yele Kyaung, Nga Htat Gyi Pagoda Road, Bahan, Yangon, Myanmar Tel: [95] (1) 549 290, 546660; Office: No. 77, Shwe Bon Tha Street, Yangon, Myanmar. Fax: [95] (1) 248 174 **Contact:** Mr. Banwari Goenka, Goenka Geha, 77 Shwe Bon Tha Street, Yangon, Myanmar Tel: [95] (1) 241 708, 253 601, 245 327, 245 201; Res. [95] (1) 556 920, 555 078, 554 459; Tel/Fax: Res. [95] (01) 556 920; Off. 248 174; Mobile: 95950-13929; Email: bandoola@mptmail.net.mm; goenka@ mptmail.net.mm; Email: dhammajoti@mptmail.net.mm

**Dhamma Ratana:** Oak Pho Monastery, Myoma Quarter, Mogok, Myanmar **Contact:** Dr. Myo Aung, Shansu Quarter, Mogok. Mobile: [95] (09) 6970 840, 9031 861;

**Dhamma Maṇḍapa:** Bhamo Monastery, Bawdigone, Near Mandalay Arts & Science University, 39th Street, Mahar Aung Mye Tsp., Mandalay, Myanmar Tel: [95] (02) 39694, Email: info@mandala.dhamma.org

**Dhamma Maṇḍala:** Yetagun Taung, Mandalay, Myanmar, Tel: [95] (02) 57655, **Contact:** Dr Mya Maung, House No 33 , 25th Street, (Between 81 and 82nd Street), Mandalay, Myanmar Tel: [95] (02) 57655; Email: info@mandala.dhamma.org

**Dhamma Makuṭa:** Mindadar Quarter, Mogok.Mandalay Division, Myanmar. Tel: [95] (09) 80-31861; Email: info@joti.dhamma.org

**Dhamma Manorama:** Main road to Maubin University, Maubin, Myanmar. Tel: **Contact:** U Hla Myint Tin, Headmaster, State High School, Maubin, Myanmar. Tel: [95] (045) 30470

**Dhamma Mahimā:** Yechan Oo Village, Mandalay-Lashio Road, Pyin Oo Lwin, Mandalay Division, Myanmar. Tel: [95] (085) 21501; Email: info@mandala.dhamma.org

**Dhamma Manohara:** Aung Tha Ya Qr, Thanbyu-Za Yet, Mon State **Contact:** Daw Khin Kyu Kyu Khine, No.64 Aungsan Road, Set-Thit Qr, Thanbyu-Zayet, Mon State, Myanmar. Tel: [95] (057) 25607

**Dhamma Nidhi:** Plot No. N71-72, Off Yangon-Pyay Road, Pyinma Ngu Sakyet Kwin, In Dagaw Village, Bago District, Myanmar. **Contact:** Moe Mya Mya (Micky), 262-264, Pyay Road, Dagon Centre, Block A, 3rd Floor, Sanchaung Township, Yangon11111, Myanmar. Tel: 95-1-503873, 503516~9, Email: dagon@mptmail.net.mm

**Dhamma Ñāṇadhaja:** Shwe Taung Oo Hill, Yin Ma Bin Township, Monywa District, Sagaing Division, Myanmar **Contact:** Dhamma Joti Vipassana Centre

**Dhamma Lābha:** Lasho, Myanmar

**Dhamma Magga:** Near Yangon, Off Yangon Pegu Highway, Myanmar

**Dhamma Mahāpabbata:** Taunggyi, Shan State, Myanmar

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

**Dhamma Cetiya Paṭṭhāra:** Kaytho, Myanmar
**Dhamma Myuradipa:** Irrawadi Division, Myanmar
**Dhamma Pabbata:** Muse, Myanmar
**Dhamma Hita Sukha Geha:** Insein Central Jail, Yangon, Myanmar
**Dhamma Hita Sukha Geha-2:** Central Jail Tharawaddy, Myanmar
**Dhamma Rakkhita:** Thayawaddi Prison, Bago, Myanmar
**Dhamma Vimutti:** Mandalay, Myanmar
**Dhamma Mitta Yāna:**

**Philippines**

**Dhamma Phala:** Philippines, Email: info@ph.dhamma.org

**Sri Lanka**

**Dhamma Kūṭa: Vipassana Meditation Centre,** Mowbray, Hindagala, Peradeniya, Sri Lanka Tel/Fax: [94] (081) 238 5774; Tel: [94] (060) 280 0057; Website: www.lanka.com/dhamma/dhammakuta; Email: dhamma@sltnet.lk

**Dhamma Sobhā: Vipassana Meditation Centre,** Balika Vidyala Road, Pahala Kosgama, Kosgama, Sri Lanka Tel: [94] (36) 225-3955, Email: dhammasobhavmc@gmail.com

**Dhamma Anurādha:** Ichchankulama Wewa Road, Kalattewa, Kurundankulama, Anuradhapura, Sri Lanka. Tel: [94] (25) 222-6959; **Contact:** Mr. D.H. Henry, Opposite School, Wannithammannawa, Anuradhapura, Sri Lanka. Tel: [94] (25) 222-1887; Mobile. [94] (71) 418-2094. Website: www.anuradha.dhamma.org; Email: info@anuradha.dhamma.org

**Taiwan**

**Dhammodaya:** No. 35, Lane 280, C hung-Ho Street, Section 2, Ta-Nan, Hsin She, Taichung 426, P. O Box No. 21, Taiwan Tel: [886] (4) 581 4265, 582 3932; Website: www.udaya.dhamma.org; Email: dhammodaya@gmail.com

**Dhamma Vikāsa: Taiwan Vipassana Centre** - Dhamma Vikasa, No. 1-1, Lane 100, Dingnong Road, Laonong Village Liouguei Township, Kaohsiung County Taiwan, Republic of China, Tel: [886] 7-688 1878; Fax: [886] 7-688 1879; Email: info@vikasa.dhamma.org

**Thailand**

**Dhamma Kamala: Thailand Vipassana Centre,** 200 Yoo Pha Suk Road, Ban Nuen Pha Suk, Tambon Dong Khi Lek, Muang District, Prachinburi Province, 25000, Thailand Tel. [66] (037) 403- 514-6, [66] (037) 403 185; Website: http://www.kamala.dhamma.org/, Email: info@kamala.dhamma.org

**Dhamma Ābhā:** 138 Ban Huay Plu, Tambon Kaengsobha, Wangton District, Pitsanulok Province, 65220, Thailand Tel : [66] (81) 605-5576, [66] (86) 928-6077; Fax : [66] (55) 268 049; Website: http://www.abha.dhamma.org/, Email: info@abha.dhamma.org

**Dhamma Suvaṇṇa:** 112 Moo 1, Tambon Kong, Nongrua District, Khonkaen Province, 40240, Thailand Tel [66] (08) 9186-4499, [66] (08) 6233-4256; Fax [66] (043) 242-288; Website: http://www.suvanna.dhamma.org/, Email: info@suvanna.dhamma.org

**Dhamma Kañcana:** Mooban Wang Kayai, Tambon Prangpley, Sangklaburi District, Kanchanaburi Province, Thailand Tel. [66] (08) 5046-3111 Fax [66](02) 993-2700, Email: info@kancana.dhamma.org

**Dhamma Dhānī:** 42/660 KC Garden Home Housing Estate, Nimit Mai Road, East Samwa Sub-district, Klongsamwa District, Bangkok 10510, Thailand Tel. [66] (02) 993-2711 Fax [66] (02) 993-2700; Email: info@dhani.dhamma.org

**Dhamma Sīmanta:** Chiengmai, Thailand **Contact:** Mr. Vitcha Klinpratoom, 67/86, Paholyotin 69, Anusaowaree, Bangkhen, BKK 10220 Thailand Tel: [66] (81) 645 7896; Fax: [66] (2) 279 2968; Email: vitchcha@yahoo.com; Email: info@simanta.dhamma.org

**Dhamma Porāṇo:** A meditator has donated six acres of land near Nakorn Sri Dhammaraj (the name of the city), an important and ancient sea-port.

**Dhamma Puneti:** Udon Province, Thailand

**Dhamma Canda Pabhā:** Chantaburi, an eastern town about 245 kilometres from Bangkok

**Australia & New Zealand**

**Dhamma Bhūmi: Vipassana Centre,** P. O. Box 103, Blackheath, NSW 2785, Australia Tel: [61] (02) 4787 7436; Fax: [61] (02) 4787 7221, Website: www.bhumi.dhamma.org; Email: info@bhumi.dhamma.org

**Dhamma Rasmi: Vipassana Centre Queensland,** P. O. Box 119, Rules Road, Pomona.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Qld 4568, Australia Tel: [61] (07) 5485 2452; Fax: [61] (07) 5485 2907, Website: www.rasmi.dhamma.org; Email: info@rasmi.dhamma.org

**Dhamma Pabhā: Vipassana Centre Tasmania,** GPO Box 6, Hobart, Tasmania 7001, Australia Tel: [61] (03) 6263 6785; Website: www.pabha.dhamma.org, Course registration & information: [61] (03) 6228-6535 or [61](03) 6263-6785, Email: info@pabha.dhamma.org

**Dhamma Āloka:** P. O. Box 11, Woori Yallock, VIC 3139, Australia Tel: [61] (03) 5961 5722; Fax: [61] (03) 5961 5765 Website: www.aloka.dhamma.org; Email: info@aloka.dhamma.org

**Dhamma Ujjala:** Mail to: PO Box 10292, BC Gouger Street, Adelaide SA 5000, [Lot 52, Emu Flat Road, Clare SA 5453, Australia] **Tel contact:** Anne Blizzard [61] (0)8 8278 8278; Email: info@ujjala.dhamma.org

**Dhamma Padīpa: Vipassana Foundation of WA,** Australia, Website: www.dhamma.org.au, **Contact:** Andrew Parry C/- 13 Goldsmith Road, Claremont, WA 6010, Australia. Tel: [61]-(8)-9388 9151. Email: andparry@optusnet.com.au; Email: info@padipa.dhamma.org

**Dhamma Medinī:** 153 Burnside Road, RD3 Kaukapakapa, Rodney District, New Zealand Tel: [64] (09) 420 5319; Fax: [64] (09) 420 5320; Website: www.medini.dhamma.org; Email: info@medini.dhamma.org

**Dhamma Passaddhi:** Northern Rivers region, New South Wales, Email: info@passaddhi.dhamma.org

**Europe**

**Dhamma Dīpa:** PENCOYD, ST. OWENS CROSS, HR2 8NG, UK Tel: [44] (01989) 730 234; Fax: [44] (01989) 730 450; Website: www.dipa.dhamma.org; Email: info@dipa.dhamma.org

**Dhamma Padhāna: European Long-Course Centre,** Pencoyd, ST Owens Cross, HR2 8NG, UK; Website: www.eu.region.dhamma.org/os username <oldstudent> password <behappy> Email: info@padhana.dhamma.org

**Dhamma Dvāra: Vipassana Zentrum,** Alte Strasse 6, 08606 Triebel, Germany Tel: [49] (37434) 79770; Fax: [49] (37434) 79771 Website: www.dvara.dhamma.org; Email: info@dvara.dhamma.org

**Dhamma Mahī: France Vipassana Centre,** Le Bois Planté, Louesme, F-89350 Champignelles, France. Tel: [33] (0386) 457 514; Fax [33] (0386) 457 620; Website: www.mahi.dhamma.org; Email: info@mahi.dhamma.org

**Dhamma Nilaya:** 6, Chemin de la Moinerie, 77120, Saints, France Tel/Fax: [33] 1 6475 1370; Mobile: 0609899079; Email: vejuly2001@orange.fr

**Dhamma Aṭala: Vipassana Centre,** SP29, Lutirano 15 50034 Lutirano (Fi) Italy Tel: Off. [39] (055) 804 818; Website: www.atala.dhamma.org; Email: info@atala.dhamma.org

**Dhamma Sumeru: Centre Vipassana,** No. 140, Ch-2610 Mont-Soleil, Switzerland Tel: [41] (32) 941 1670; Website: www.sumeru.dhamma.org; Email: info@sumeru.dhamma.org; Registration office: registration@sumeru.dhamma.org

**Dhamma Neru: Centro de Meditación Vipassana,** Cami Cam Ram, Els Bruguers, A.C.29. Santa Maria de Palautordera, 08460 Barcelona, Spain Tel: [34] (93) 848 2695; Website: www.neru.dhamma.org; Email: info@neru.dhamma.org

**Dhamma Pajjota:** Dhamma Pajjota, Belgium, Light (or Torch) of Dhamma, Vipassana Centrum, Driepaal 3, 3650 Dilsen-Stokkem, Belgium. Tel: [32] (0) 89 518 230; Website: www.pajjota.dhamma.org; Email: info@pajjota.dhamma.org

**Dhamma Sobhana:** Lyckebygården, S-599 93 Ödeshög, Sweden. Tel: [46] (143) 211 36; Website: www.sobhana.dhamma.org; Email: info@sobhana.dhamma.org

**Dhamma Pallava: Vipassana Poland, Contact:** Malgorzata Myc 02-798 Warszawa, Ekologiczna 8 m.79, Poland, Tel: [48](22) 408 22 48; Mobile: [48] 505-830-915, Email: info@pl.dhamma.org

**Dhamma Sukhakari:** East Anglia (UK)

**North America**

**Dhamma Dharā: VMC,** 386 Colrain-Shelburne Road, Shelburne MA 01370-9672, USA Tel: [1] (413) 625 2160; Fax: [1] (413) 625 2170; Website: www.dhara.dhamma.org; Email: info@dhara.dhamma.org

**Dhamma Kuñja: Northwest Vipassana Center,** 445 Gore Road, Onalaska, WA 98570, USA Tel/Fax: [1] (360) 978 5434, Reg Fax: [1] (360) 242-5988; Website: www.kunja.dhamma.org; Email: info@kunja.dhamma.org

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

**Dhamma Mahāvana: California Vipassana Center,** 58503 Road 225, North Fork, California, 93643 **Mailing address:** P. O. Box 1167, North Fork, CA 93643, USA Tel: [1] (559) 877 4386; Fax [1] (559) 877 4387; Website: www.mahavana.dhamma.org; Email: info@mahavana.dhamma.org

**Dhamma Sirī: Southwest Vipassana Center,** 10850 County Road 155 A Kaufman, TX 75142, USA **Mailing address:** P. O. Box 7659, Dallas, TX 75209, USA Tel: [1] (972) 962-8858; Fax: [1] (972) 346-8020 (registration); [1] (972) 932-7868 (center); Website: www.siri.dhamma.org; Email: info@siri.dhamma.org

**Dhamma Surabhi: Vipassana Meditation Center,** P. O. Box 699, Merritt, BC V1K 1B8, Canada Tel: [1] (250) 378 4506; Website: www.surabhi.dhamma.org; Email: info@surabhi.dhamma.org

**Dhamma Maṇḍa: Northern California Vipassana Center, Mailing address:** P. O. Box 265, Cobb, Ca 95426, USA Physical address: 10343 Highway 175, Kelseyville, CA 95451, USA Tel: [1] (707) 928-9981; Website: www.manda.dhamma.org; Email: info@manda.dhamma.org

**Dhamma Suttama: Vipassana Meditation Centre,** 810, Côte Azélie, Notre-Dame-de-Bonsecours, Montebello, (Québec), J0V 1L0, Canada Tél. 1-819-423-1411, Fax. 1- 819- 423- 1312, Website: www.suttama.dhamma.org; Email: info@suttama.dhamma.org

**Dhamma Pakāsa: Illinois Vipassana Meditation Center**, 10076 Fish Hatchery Road, Pecatonica, IL 61063, USA Tel: [1] (815) 489-0420; Fax [1] (360) 283-7068 Website: www.pakasa.dhamma.org; Email: info@pakasa.dhamma.org

**Dhamma Toraṇa : Ontario Vipassana Centre**, 6486 Simcoe County Road 56, Egbert, Ontario, L0L 1N0 Canada Tel: [1] (705) 434 9850; Website: www.torana.dhamma.org; Email: info@torana.dhamma.org

**Dhamma Vaddhana: Southern California Vipassana Center,** P.O. Box 4%6, Joshua Tree, CA 92252, USA. Tel: [1] (760) 362-4615; Website: www.vaddhana.dhamma.org; Email: info@vaddhana.dhamma.org

**Dhamma Patāpa: Southeast Vipassana Trust,** Jessup, Georgia, South East USA Website: www.patapa.dhamma.org

**Dhamma Modana:** Canada Tel: [1] (250) 483-7522; Website: www.modana.dhamma.org; Email: info@modana.dhamma.org

**Dhamma Karunā: Alberta Vipassana Foundation,** Tel: [1](403) 283-1889; Fax: [1](403) 206-7453; Email: registration@ab.ca.dhamma.org

## Latin America

**Dhamma Santi: Centro de Meditação Vipassana,** Miguel Pereira, Brazil Tel: [55] (24) 2468 1188. Website: www.santi.dhamma.org; Email: info@santi.dhamma.org

**Dhamma Makaranda: Centro de Meditación Vipassana,** Valle de Bravo, Mexico Tel: [52] (726) 1-032017, **Registration and information:** Vipassana Mexico, P. O. Box 202, 62520 Tepoztlan, Morelos Tel/Fax: [52] (739) 395-2677; Website: www.makaranda.dhamma.org; Email: info@makaranda.dhamma.org

**Dhamma Pasanna:** Melipilla, Chile, Email: info@pasanna.dhamma.org

**Dhamma Sukhadā:** Buenos Aires, Argentina, **Contact:** Vipassana Argentina, Tel: [54] (11) 6385-0261; Email: info@ar.dhamma.org

**Dhamma Veṇuvana: Centro de Meditación Vipassana,** 90 minutes from Caracas, Sector Los Naranjos de Tasajera, Cerca de La Victoria, Estado Aragua, Venezuela. (See map on the website) Tel: [58] (212) 414-5678 For information and registration: Calle La Iglesia con Av. Francisco Solano, Torre Centro Solano Plaza, Of. 7D, Sabana Grande, Caracas, Venezuela. Phone: [58](212) 716-5988, Fax: 762-7235 Website: www.venuvana.dhamma.org; Email: info@venuvana.dhamma.org

**Dhamma Suriya: Centro de Meditación Vipassana,** Cieneguilla, Lima, Perú Email: info@suriya.dhamma.org

**Dhamma Nandanvana:** Colombia

## South Africa

**Dhamma Patākā:** (Rustig) Brandwacht, Worcester, 6850, P. O. Box 1771, Worcester 6849, South Africa Tel: [27] (23) 347 5446; **Contact:** Ms. Shanti Mather, Tel/Fax: [27] (028) 423 3449; Website: www.pataka.dhamma.org; Email: info@pataka.dhamma.org

## Russia

**Dhamma Dullabha:** Phones +7-968-894-23-92, +7-901-543-16-27

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आचार्य श्री सत्यनारायणजी गोयन्का एवं श्रीमती इलायचीदेवी गोयन्का

श्री सत्यनारायणजी गोयन्का का जन्म म्यंमा (बर्मा) के मांडले शहर में १९२४ में हुआ। १०वीं कक्षा में सारे बर्मा में सर्वप्रथम आने पर भी पारिवारिक कारणों से आगे की पढ़ाई न कर सके। उन्होंने कम उम्र में ही अनेक वाणिज्यिक और औद्योगिक संस्थानों की स्थापना की और खूब धन अर्जित किया। अनेक सामाजिक तथा सांस्कृतिक केंद्रों की स्थापना की। तनावों के कारण शिरोरोग (Migraine) के शिकार हुए, जिसका उपचार बर्मा के ही नहीं, बल्कि विश्व के प्रसिद्ध डॉक्टर भी न कर सके। तब किसी ने उन्हें 'विपश्यना' की ओर मोड़ा, जो आज उनके तथा अनेकों के कल्याण का कारण बन गयी है।

सयाजी ऊ बा खिन से श्री गोयन्काजी ने १९५५ में विपश्यना विद्या सीखी और चौदह वर्षों तक उनके चरणों में बैठ कर अभ्यास करने के साथ बुद्धवाणी का भी अध्ययन किया। १९६९ में वे भारत आये और मुंबई में पहला शिविर लगा। तत्पश्चात शिविरों का तांता लग गया। १९७६ में इगतपुरी में पहला निवासीय विपश्यना केंद्र बना और अब तक विश्वभर में लगभग १६७ केंद्र बन गये हैं तथा नित नये बनते जा रहे हैं, जहां प्रशिक्षित किये हुए लगभग १२०० विपश्यनाचार्यों के माध्यम से विश्व की ५९ भाषाओं में १०-दिवसीय शिविरों के अतिरिक्त, कई केंद्रों पर २०, ३०, ४५, ६० दिन के शिविर लगते हैं। सब का संचालन निःशुल्क होता है। भोजन, निवासादि का खर्च शिविर से लाभान्वित साधकों के स्वैच्छिक अनुदान से चलता है। इसके सर्वहितकारी स्वरूप को देख कर विश्व की अनेक जेलों और स्कूलों में ही नहीं, पुलिसकर्मियों, जजों, सरकारी अधिकारियों आदि के लिए भी शिविर लगाये जाते हैं।

ISBN 81-7414-275-4
VRI - H32

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh